GOSSNER EVANGELICAL – LUTHERAN CHURCH
IN CHOTANAGPUR AND ASSAM

GELC ARCHIVE

Signature: **GELC-A _ 001 _ 0636**

Classification:

Original File No

Title

B.E.L. Report- 1980

Volume:

Running **from year: 15-10-1980** **till year: 18-10-1980**

Content:

- Report- Joshipur, Kanpur, Nakti, Jagnathpur, Manoharpur, Borsole, Midnapur, Baghima, 1980.

Dr. Singh

BEL

~~1980~~

1980

MINI-DISTRIBUTION SEMINAR

B. S. I. BIHAR AUXILIARY
RANCHI

THE 13TH SEPTEMBER 1979

मसीही धर्म के विजय बतलाया जाता है।

८. मसीहियों के बीच मसीही धर्म की जागृति के उपाय :— हर साल दो तीन पेरिशें मिल कर चुने हुए विषयों पर धर्मसभाओं में लेक्चर दिया जाता है। लेक्चर के बाद बहस भी चलते हैं। साथ साथ गीत भजन भी चालू रहता है। कहीं २ मसीही संगति को मजबूत रखने के लिए पर्व त्योहारों में प्रेम भोज भी ठहराया जाता है। सभी अपना अपना खर्च ले कर सम्मेलनों को सफल बनाने के लिये योगदान देते हैं। मसीही महिलाओं के बीच जागृति लाने के लिए नारायणपुर पेरिश ने महिला सम्मेलन एवं उसका संगठन भी आरम्भ किया गया है।

९. मसीहियों को विश्वास में दृढ़ रखने के उपाय :— कर्मचारी वर्ग घर मुलाकात के साथ, मौका जान कर गीतों और प्रार्थना साथ उपस्थित झुंड को वचन सिखाते और वचन पर प्रकाश डालते हैं। एतवार आराधना में उपदेश के साथ सवाल जवाब भी किया जाता है। सन्डे स्कूलों में धर्म शास्त्र से चुने हुए वर्णन साथ गीत भजन और कैटिकिस्म सिखाये जाते हैं।

१०. रात्री पाठशाला :- अधिकांश मंडलियों में रात्री पाठशाला चालू है। लिखना पढ़ना के अलावे नैतिक सामाजिक और धार्मिक शिक्षा भी दी जाती है। कभी २ कामों की भीड़ के कारण और वर्षा के कारण कुछ सप्ताहों के लिए पाठशाला बन्द करना पड़ता है। कहीं २ रोशनी की सुविधा न होने के कारण दिन के समय भी पढ़ाया जाता है। इसके जरिये बहुतों को अच्छा लाभ होते जा रहा है

११. मीटिंगस :- हर माह पेरिशों में पेरिश मीटिंगें होती हैं जहां महिने भर का एतवार पाठकों की शिक्षा, प्रचारकों के कार्यों की रिपोर्ट, मंडली रिपोर्ट एवं अन्य मंडली सम्बन्धी बातें ली जाती हैं। इस तरह कर्मचारी वर्ग एक दूसरे की मदद करते हैं। कभी २ समय जान कर पास के टोलों में भी रात्री के समय सब कर्मचारी मिल कर गीत भजन साथ वचन सुनाने जाते हैं। अन्त में, सेन्ट्रलाइज एवं तलब बटवारे का काम होता है।

१२. घर निर्माण, मरम्मती कार्य एवं जमीन बन्दोबस्ती कार्य :— बाइसोल पेरिश के बेलनाड़ में 80 डिसमिल जमीन खरीदा जाकर एक छोटा अस्थायी घर बनाया गया है। नकटी पेरिश के रोलाडीह मंडली घर निर्माण हेतु लकड़ी बन्दोबस्त हैं। उसी तरह नकटी गिरजा घर मरम्मती के लिए लकड़ी जोगाड़ हैं। और पेरिशों के

अन्य मण्डलियों मे भी जहां मरम्मती की आवश्यकता थी रकम दिये गये है। फिर गत साल की आधूरी मकानों की पूर्ती के लिये भी रकम बंट दिये गये है। आशा है सभी कार्य सुसमय पर निपट जायेंगे।

१३, फण्ड:- केन्द्र के कर्मचारियों एवं मण्डली के लाभ एवं उन्नति के लिए फण्ड खोले गये है।

१- कर्मचारियों के लिए कोओपरेटिव फण्ड जिसमे प्राय ४२०० रुपये, चाईबासा केनारा सेविंग्स बैंक एकौन्ट मे रखा गया है

२. Revolving fund का रुपैया भी इसी एकौन्ट मे रखा गया जिसमें प्राय ५000 रुपये है।

३, जायदाद सुरक्षा फण्ड जिसमे प्राय २५00 रुपैया है इसी बैंक के फिक्स्ड डिपाजिट मे रखा गया है। तीने फण्ड के रकम तीन जनों के जोईन्ट ओपारेटर्स मे है।

४ मण्डलियों यहां वहां छोटे रूप मे फण्ड खोले गये है जिसका हिसाब किताब मण्डली ही मे रखा है।

१४, मण्डली आमद:-

जनवरी	५६०·०१
फरवरी	७२४-00
मार्च	६२४-42
अप्रैल	११६१-६६
मई	६५३-३६
जून	१३२६-०४
जुलाई	१०६६-32
अगस्त	६४४-६१
सेप्टेम्बर	४६६-४६
कुल:	७४३१-५४

उक्त पूरे आमद मे से मण्डली पैसा और आंचल चौथा आंचल खजाने मे केन्द्रित किया गया और बाकी को उस रकम खजान्ची के हात मे जिम्मा दिया गया है।

आगे मे सभी सलाहें आमंत्रित है।

[signature] 12-10-80
Supervisor
S.E. Anchal Mission

रांची शिक्षा क्लास के अवसर पर द० पू० अंचल मिशन क्षेत्र का संक्षिप्त रिपोर्ट। ता० १६-१६ अक्तोबर १९८०

महामान्यवर

डैरेक्टर बी० डी० एल०, शिक्षक वृन्द, एवं उपस्थित मेरे संगी कर्मचारी वर्गों को, योशुसहाय।

महाशयो

ईश्वर को धन्यवाद होवे कि उसने कई वर्षों के बाद भी कलीशा के राज्यवृद्धि क्षेत्र के कर्मचारियों को हमारे केन्द्र स्थान में इस शिक्षा शिविर में भाग लेने का मौका दिया है। मुझे हर्ष है कि इस मौके में हमारे द० पू० अंचल मिशन क्षेत्र कार्यों का संक्षिप्त रिपोर्ट आप के समक्ष दूं। अतः इस रिपोर्ट में जानने लायक कोई विशेष बात छूट भी जाय तो हमारे बात चीत के दरमियान पूछताछ भी कर सकते हैं।

१- राज्यवृद्धि कार्य क्षेत्र :- गोस्सनर कलीशा द्वारा यह कार्य द० पू० अंचल के सिंहभूम इलाका, एवं बंगाल इलाका अन्तर्गत जारी है। जिसमें प्रदेश के दृष्टिकोण से बंगाल, बिहार और उड़ीसा प्रान्त के मिदनापुर, सिंहभूम, क्योंझर और मयूरभंज जिलों में काम चालू है।

२ कर्मचारियों की संख्या :- इस क्षेत्र में राज्यवृद्धि कार्य के लिए कलीशा की ओर से सुपरभैजर के साथ 6 पादरी ४२ पूर्ण वेतन भोगी प्रचारक, १० अर्धवेतन भोगी, एक शिक्षक एवं एक प्रशिक्षार्थी हेतु गोविन्दपुर में रहने वाले के साथ कुल ६० कर्मचारी काम कर रहे हैं।

३ पेरिश एवं मण्डलियों की संख्या :- पेरिशों की संख्या ६ है। १ चक्रधरपुर पेरिश में पादरी एफ० हंसदा, २ जगन्नाथपुर पेरिश में पादरी के० डी० केरकेटा, ३ मनोहरपुर पेरिश में पादरी सी० डी० ओड़िया ४ जशीपुर पेरिश में पादरी रमेश्वर सिन्हा ५ कोड़सोल पेरिश में पादरी एम० एन० कन्डुलना ६ कानपुर पेरिश में पादरी का० जे० लकड़ा है। सुपरभैजर ने चाइबासा और जमशेदपुर पेरिश के अन्दर २ मण्डलियों का देख भाल करने के लिए अपने जिम्मे लिया है। इस तरह सारे क्षेत्र में कुल ५२ छोटी बड़ी मण्डलियां हैं। इन्हें छोड़ कर एक प्राइमरी प्रस्तावित स्कूल है।

४. जनगणना :- घर संख्या ५५५ कलीसिया संख्या २६०४ वृंदावन संख्या २०५२ और नये धर्म खोजकों की संख्या जो इन सभा कलीसिया पाये है २५६ है।

५. क्षेत्र की प्राकृतिक स्थिति :- बिहार का सिंहभूम जिला एवं उड़ीसा का मयूरभंज जिला, पहाड़ पर्बतों एवं घने जंगलों के बीच बसा हुआ है। मण्डलियां इन्हीं पहाड़ों और जंगलों के बीच और किनारे बनाये गये हैं। इस क्षेत्र में अधिकतर हो परिवार के लोग मसीही धर्म में आये हैं। इस जाति की अपेक्षा मुंडा उरांव संथाल और कुछ कोड़ जाति के लोग भी है जो कम हैं। कर्मचारियों की सेवा का कार्य कभी 2 जंगली हिंसक जानवर, जैसे बाघ भालू, हाथी से भी मुलाकात हो जाती है। पर ईश्वर को धन्यवाद इन जानवरों से हमारे कर्मचारी अब तक सुरक्षित हैं।

बंगाल क्षेत्र सुवर्णरेखा बड़ी नदी के अगल बगल है जो समतल मैदान पर चौड़ी हो कर बहती है इस क्षेत्र में पहाड़ नदी है पर कहीं कहीं जगहों में घने जंगल है जहां हिंसक जानवरों का भय नहीं पर चोर डकैत लोगों का भय है। उस भाग के जंगलों में लोधा जाति के जंगली लोग हैं जो जंगलों के बीच यात्रियों पर हमला कर माल असबाबों को लूटते और मार काट करते है बीते वर्षों में हमारे दो कर्मचारी ऐसी घटना में फंसे थे पर सामान असबाबों को छोड़ कर जान की हानि से बच गये। इस क्षेत्र में संताल और लोधा जाति के लोग मसीही हुए हैं।

६. सारा क्षेत्र मूर्ती एवं देव पूजकों से भरा है। दुःख बिमारी के समय मुर्गी बकरा, सुअर कबूतर आदि जीवों का बलिदान करते। इस तरह दुःख बिपत से बचने के लिए सैकड़ों रुपैये और जानवरों का कर्ज लेते रहते हैं। दान दक्षिणा और रुपैया पैसा के अभाव से थक जाने पर मसीही धर्म की खोज करते हैं।

७. प्रचार कार्य का तरीका :- डाक्टरी साथ दवा बिरता इस्तेमाल कर रोगी दुखियों की सेवा की जाती है। व्यक्तिगत, एवं सामुहिक प्रचार द्वारा लोगों को मसीह के पास लाना, धर्म मेलों में गीत भजन, ग्रामफोन एवं फ्लेनलग्राफ द्वारा मसीह प्रचार जाता है। मौके पर सरकारी कामों की सलाहों से लोगों की सहायता करते हैं। भाई बहिन गीत भजन और नाच ढंग के प्रिय होने के नाते धर्म मेलों में भीड़ की भीड़ जमा होते हैं। इसी बीच मौका देख कर

मसीही धर्म के विषय बतलाया जाता है।

८. मसीहियों के बीच मसीही धर्म की जागृति के उपाय :—
हर साल दो तीन पेरिशें मिल कर चुने हुए विषयों पर धर्मसभाओं में लेक्चर दिया जाता है। लेक्चर के बाद बाहस भी चलते हैं। साथ साथ गीत भजन भी चालू रहता है। कहीं २ मसीही संगति को मजबूत रखने के लिए पर्व त्योहारों में प्रेम भोज भी ठहराया जाता है। सभी अपना अपना खर्च ले कर सम्मेलनों को सफल बनाने के लिये योगदान देते हैं। मसीही महिलाओं के बीच जागृति लाने के लिए जरीपरपेरिश ने महिला सम्मेलन एवं उसका संगठन भी आरम्भ किया गया है।

९. मसीहियों को विश्वास में दृढ़ रखने के उपाय :— कर्मचारी वर्ग घर मुलाकात के साथ, मौका जान कर गीतों और प्रार्थना साथ उपस्थित झुन्ड को बचन सिखाते और बचन पर प्रकाश डालते हैं। एतवार आराधना में उपदेश के साथ सवाल जवाब भी किया जाता है। सन्डे स्कूलों में धर्म शास्त्र से चुने हुए वर्सों साथ गीत भजन और कटेकिज़्म सिखाये जाते हैं।

१०. रात्रीपाठशाला :— अधिकांश मंडलियों में रात्री पाठशाला चालू है। लिखना पढ़ना के अलावे बौद्धिक सामाजिक और धार्मिक शिक्षा भी दी जाती है। कभी २ कामों की भीड़ के कारण और वर्षा के कारण कुछ सप्ताहों के लिए पाठशाला बन्द करना पड़ता है। कहीं २ रोशनी की सुविधा न होने के कारण दिन के समय भी पढ़ाया जाता है। इसके जरिये बहुतों को अच्छा लाभ होते जा रहा है।

११. मीटिंगस :— हर माह पेरिशों में पेरिश मीटिंगे होती हैं जहां महिने भर का एतवार पाठ की तिथी, प्रचारकों के कार्य की रिपोर्ट, मंडली रिपोर्ट एवं अन्य मंडली सम्बन्धी बातें की जाती हैं। इस तरह कर्मचारी वर्ग एक दूसरे की मदद करते हैं। कभी २ समय जान कर पास के टोलों में भी रात्री के समय सब कर्मचारी मिल कर गीत भजन साथ वचन सुनाने जाते हैं। जल्द में, सेन्ट्रलाइज एवं तलब बटवारे का काम होगा है।

१२. घर निर्माण, मरम्मती कार्य एवं जमीन बन्दोबस्ती कार्य :— बोड़सोल पेरिश के अलिनाई में ४० डिसमिल जमीन खरीदा जा कर एक छोटा अस्थायी घर बनाया गया है। नकटी पेरिश के रोलाडीह मंडली घर निर्माण हेतु लकड़ी बन्दोबस्त है। उसी तरह नकटी गिरजा घर मरम्मती के लिए लकड़ी जोगाड़ है। और पेरिशों के

अन्य मराइलियों में भी जहां मरम्मती की आवश्यकता थी रकम दिये गये है। फिर गत साल की आपूर्ती मकानों की पूर्ती के लिये भी रकम दे दिये गये हैं। आशा है सभी कार्य सुसम्पन्न निपट जायेंगे।

१३, फन्ड : तेत्र के कर्मचारियों एवं मराडली के लाभ एवं उन्नति के लिए फन्ड खोले गये हैं।

१- कर्मचारियों के लिए कोओपरेटिव फन्ड जिसमे प्राय ४८०० रुपये, चाईबासा केनारा सेविंग्स बैंक एकौन्ट मे रखा गया है

२. Revolving fund का रुपैया भी इसी एकौन्ट मे रखा गया जिसमें प्राय ५000 - रुपैये हैं

३, जयदाद सुरक्षा फन्ड जिसमे प्राय २५०० रुपैया है इसी बैंक के फिक्स्ड डिपाजिट मे रखा गया है तीने फन्ड के रकम तीन जनों के जोइन्ट कोपारेटर्स में है।

४ मराडलियो यहां वहां छोटे रुप मे ग्रेन गोला खोले गये है जिसका हिसाब किताब मराडली ही मे रहता है।

१४, मराडली आमदनी :-

जनवरी	५६०-०१
फरवरी	७२८-००
मार्च	६२४-४२
अप्रैल	११६१-६६
मई	६५३-३६
जून	१३२६-०४
जुलाई	१०६६-३२
अगस्त	६४४-६१
सेप्टेम्बर	४६६-४६
कुल :	७४३१-५४

उक्त पूरे आमद मेंसे मराडली पैसा और आंचल चेंदा आंचल खजाने मे केन्द्रित किया गया और बोर्डों के बस एवं खजान्ची के हात मे जिम्मा दिया गया है।

अन्त मे सभी सलाहें आमंत्रित हैं।

A. Surin 12-10-80
, Supervisor
S.E. Anchal Mission field

Short Report of Joshipur Parish.
Dated 15.10.80.

To The Director B.E.L. Ranchi. Bihar.
&
The Anchal Adhyaksha, South East Anchal.
Kodma, Khunti. Ranchi,
&
The supervisor, South East Anchal Mission field, Chaibasa. Singhbhum.

Honour Sir,

Yesu Sohay to you all from the brothers and sisters of Joshipur Parish. ~~for~~ the time being we are keeping well. by the grace of our Heavenly Father.

Now, I like to produce a brief Report of Joshipur Parish. It is a small Parish, but area of it's is vast. The Congregations are scattered far and near of it's. This Parish, working in two districts. One is Moyurbhanj, other is Singh-bhum. In Mayurbhanj there are 11. small congregations and in Singhbhum 2. Congregations. Last year there were 481 baptised members, but this year it has come to 509. Confirmed person up to now 227. With balak baptised 7. Dhorom khojaks 20. and Confirmed 1.

Description of Congregations:- As it is already said, there are 13 Congregations. Those are these — ① Joshipur ② Boroduma, ③ Badam Pahar ④ Chheligudly, ⑤ Chulabhanga. ⑥ Kuldiha. ⑦ Monzgaon, ⑧ Barakatta, ⑨ Kolayduma.
In Simlipal area there are four Congregations —
⑩ Gitilpiri ⑪ Saruda, ⑫ Gopinathpur, ⑬ Nebugadan

~~In~~ Simlipal ~~area~~ it is 60 KM. from Joshipur. This area is sourounded by dense forest and lofty mountains.

There is no such Convinience that one or two can go. So, if any one wants to go he has to take two or three Persons with him. But in rainy season it is most defficult to go; mountain streems are over flooded. So defficult to Cross them.

In Saruda and Gopinath pur there are Part time Procharak, but at Gitil Piri which is big Congregation vacant there. It is given Charge to Saruda Procharak. At Nebu gada, given charge to Daud Mundu of Gitil Piri a Swayang Sevak. At Nebu gada and near about there are some dhorom khojaks who are expecting for Christ-near future. For Simli Pal Procharaks if they attend Parish meeting took four days to return. As they are Part time workers it is loss to them. Even for Pastor it is defficult to go in rainy season. So, for Simli Pal — Congregations Pastor has Chance to go not more than two or three times within a year. In Simli-Pal area there are some Dhorom Khojak, but want of full time ~~workers~~ Procharaks, and guidence, follow-up work is not Properly done.

If one Pastor is given in Simli Pal area. I think, those who are in darkness they may get light of christ. So, if authority think of the area and Congregations for better Service then field may grow in that area. It is Confirmed that, at Chakdi where three Santal families are getting ready for baptism. This year they had hard time to run their families that why they took time.

In Joshipur area there are nine Congre-gations. Kolaylumba, Booduma, Badam Pahar and Chula bhanga Congregations are extree-mly poor. They depends on manual labour and selling the fire wood. Because of such condition, some time they have to live in stervation. Some time half feed. They have no cloth to wear, they feel shy to sit in church Service. If their absence is enquired, reply is — We have no cloth, so we did not go. Though their ~~extreeml~~ extreem poverty still they stick to their faith.

Church Property:— In Joshipur Parish some places church has purchased land. Such as chheligudly 0-70 Dec. Mongaon. 0-35 Dec. Borduma 0-70 Dec. Chulabhanga. 0-02 Out of those no purchased land. But yet in the time of settlement at chula bhanga Sarnda and gitil piri some land ~~is~~ have been recorded in the name of G.E.L. Church. But tikkets are not yet received. For kolaylumba land, they are trying to get through Tahasildar but not yet finalized.

Construction works:— In this parish there are no such permanent Dera or chapel have been Constru-cted. Temporary Procharak Deta are at Bordu-ma and Kolay lumba; ~~or there at chula~~ which needed every year repear. Because shauri and straw is quickly spoilled by white ants, so in those places permanents houses should be constructed near future.

It is sorry to say that at chheligudly where permanent chapel is under construction not yet completed due to short of bricks. Bricks which were brought those were spoilled

by the neglegience of Procharak. There is enough bricks for Construction of wall. But those are inside the paddy land. Just after harvesting those will be brought and work be started; with in December we keep hope of complesion. Then Chulathanga there, chapel is ~~heavin~~ heavily damaged, the wall of West part craked top to bottom. It is about to fall. If it is not repaired some time it will fall. and tils of houses will be broken into Pieces. It will be great loss for Congregation.

For Badam Pahar there is nothing. Church has purchased one plot which 0-35 Dec. that is recorded in the name of G.E.L Church. in the time of Settlement. In that Congregation 10 families are worshiping but there is no sufficient room for ~~whi~~ worship. In small room where Procharak is living worshiping done there. Again there are 10-12 dhorom khojaks who were ready to take baptism - date ~~also~~ for that was fixed on 12th instant due to poverty some of them out, could not returned in time, so the Program is Cancelled.

<u>Parish activities</u> :- Every first week of the month, Parish karmachary meeting is held. In the Parish meeting Procharaks were asked to give reports of their respective Congregations. Parish Panches were Present there, some time they also asked whether reports are true or ~~falls~~ false. They also help Parish to solve the Problems. Time of Parish sermon class, Practice Preaching and critism also done. In Parish, night schools, Sunday schools Mala Somaj, Raj bidhi services ~~also~~ Conducted. If any Problems arised in ~~the~~ Congregation then Parish go there and Control the situation This year Parish able to held Bible Siksha Sibir, at Saruda where most of the brothers and sisters took part. This year Mahila Somity Sammellan is not held due to Extreem Poverty.

Gospel Propogation :- for preaching parish-sometime held dhorom mella, Preaching and personal witnesses are given there. git bhojon also done. Personal Contact aplied for preaching. Through serving the sicks also done preaching. Though open air preaching is prohibited - but yet, if villagers willing then it can be done. Calls are coming from here and there but follow-up work is not properly done.

Requirments :- As this is a mountainous area, people those who lives here mostly suffered by various sickness. This area is famous for maleria. There is no such arrangement that poor people can get medicine. Some time no money with them to purchased. If some medicines suplied by Board to every parish centre that Procharak can get when they needed. Then I think our people may not ~~get~~ suffered.

Secondly some preaching materials — such as phannel graphs. Petro max, magic lantern with sufficient slides then it may be easier the village people, as they are illiterate to convince them.

Defficulties :- In every states open air preaching is prohibited. Though it is done some time needed permission from the villagers. Though, people are willing to convert but there are such propagation going on by hearing that willing person become chacked. The propaganda is — if any one converted he lost his tribal ship, he will not get any help from government and deprived from paternal property. Again it is

said that time will come when all christian will be driven out from India to their land. This kind of Problem arised at Kolaylumba-Congregation.

Chacking of office from goverment servant is done now and then. This year two times Parish office was chacked. The C.I.D. officers noted, Parish income, expenses. money from out side, sources of income, tatal christians (of Parish juridiction) total Baptism of this year. Villagers very often bring problems to our brothers. those are at their time of different functions and Puja; they asked them chanda. This kind of Problems are still hanging at Kolaylumba Congregation. They have stopped working in the village. So they have to go other villages for work.

Income:- As it is said before, due to last year's drought; economics condition of this area is very bad. There is no source of income. Mostly inhabitants are Adibasis So, they have to depend on wild roots and fruits. People left their houses, for in search of work. Few men in the Congregation, the income auto matically down. The income which has come in Parish given below.

January	Rs. 103=19 Paisa.
February	Rs. 204=58 "
March	Rs. 218=89 "
April	Rs. 152=13 "
May	Rs. 127=61 "
June	Rs. 146=25 "
July	Rs. 118=36 "
August	Rs. 177=53 "
September	Rs. 104=45 "
	Rs. 1352=99 Paisa.

Yours faithfully.

Rev. R. Sinha

कानपुर पेरिस की वार्षिक प्रतिवेदन
१९८०

महा डी० ई० एल०
मान्यवर संचालक रांची द० पू० आंचल
आध्यक्ष कदमा खूंटी,
द्वारा,
क्षेत्रिय सुपरभैजर जी० ई० एल० सी चाईबासा तथा
उपस्थित सभी संगी कर्मचारियों को कानपुर पेरिस
की ओर से यीशु सहाय।
महाशय,
मैं कानपुर पेरिस की संक्षिप्त प्रतिवेदन पेश
पेश करता हूँ।

परिचय:— कानपुर पेरिस कानपुर नामक ग्राम में बसा हुआ है।
यह हावड़ा द० पू० रेलवे लाइन खड़गपुर जंक्शन
से ३५ किलोमीटर दक्षिण बेलदा और बेलदा से ५
किलोमीटर पश्चिम करवी रोड के किनारे पड़ता है। उड़ी-
सा टैंक रोड बेलदा से दांतन तक दोनों ओर पूरब
और पश्चिम में मंडलियां अवस्थित है। फिलहाल ६
छोटो २ मंडलियां हैं, जहाँ पर ४ आद्धवेतन ५ पूरा
वेतन प्रचारक और एक पादरी सुसमाचार प्रचार
कार्य में लागे हैं।
१९७९ के मर्दुमशुमारी के अनुसार घर संख्या
७५ बपतिस्मा संख्या ३७४ और दृढ़िकृत संख्या ९९
रही इस साल नये दृढ़िकृतों के साथ १०६ हुए।

मिशन जयदद:— कानपुर खुस्टोनगर, मालपामुना, सुरीसा
मनीकडंगा में थोड़ी थोड़ी जामीन खरीदी गई
कानपुर में स्थायी डेरा, गिरजा घर है। इसी तरह
खुस्टोनगर, मनीकडंगा और मालयामुना में
स्थायी डेरा घर है। बाकी स्थानों में जामीन तथा
उपासनालय नही है। वर्तमान झोपड़ियों और कलीसी
भाइयों के घर में उपासना चलाया जा रहा है।

सुसमाचार कार्य:—
हमारे क्षेत्र में सुसमाचार प्रचार का कार्य
आपसी संगति, भेंट मुलाकत परचौं वितरण
दवा दारुओं की सेवकाई के माध्यम से
किया जाता है। समय समय पर धर्म मेला
का आयोजन किया जाता है। इस साल

दो बार धर्म मेला आयोजित इन साल अब तक 3 परिवार और व्यक्तिगत रुप से कुल 16 जनों का पवित्र बपतिस्मा सम्पन्न हुआ है। फिर कुछ धर्म खोजक है जिनको बपतिस्मा नहीं दिया जा सका है।

प्रतिमाह कर्मचारियों का पेरिस बैठकी होती है। जिसमें मंडली रिपोर्ट, संगीत उपदेश तैयारी प्रचारक और प्रचारकों के काम आराधना सीखते और सिखाए जाते हैं। मंडलियों के समस्यों पर एक साथ विवेचना करते हैं और एक साथ उपस्थित समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न करते हैं। सभी कर्मचारीगण अनेक प्रकार की कठिनाइयों के होते हुए भी अपने काम में प्रयत्नशील हैं।

लौकिक और आत्मिक:—

हमारे पेरिस के अन्दर विभिन्न जाति के लोग मसीही हैं। उनमें कोड़ा मुन्डा, मुन्डा संथाली से मुन्डा और बंगाली विशेष हैं। ये आदिवासी हैं। और मुख्य पेशा खेतीबारी एवं कृति बनिहार है। अधिकतर लोग गरीब है कितने भाई बहिनों का अपना निजी जमीन जगह नहीं है वे पड़ती जगहों में रहते हैं। वे अपने जीविका के लिए प्रतिदिन कृति बनिहार करते हैं। वे भी भाई बहने जीविका की खोज में महीनों वर्षों तक बाहर ही रहते हैं। दूसरी ओर कुछ मसीही धनी हैं। वे भी गृहस्थ काम में लगे रहने से गिरजा (कलीसिया) कम आते हैं। इस प्रकार से लौकिक दृष्टिकोण से अधिकतर आर्थिक अवस्था खराब तथा सोचनीय है।

अतः मिश्र उपस्थिति माध्यम रहती है। क्योंकि बहुधा आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण से रोजी रोटी की खोज में दूर दूर चले जाते और कई दिनों महीनों तक बाहर ही रहते हैं। इसलिए उनको सेवा शुद्धि शिक्षा दीक्षा देने में कठिनाई होती है। देश में प्रचार करते हुए भी मतवालापन, व्यभिचार, अन्धविश्वास का पाप है। आत्मिक सेवाकाई के लिए प्रोग्राम के मोताबिक प्रत्येक मंडलियों में पवित्र प्रभुभोज बाँटा जाता है।

समाज सेवा कार्य:—

अल्प संख्यक मसीही होने के कारण गैर मसीही लोग उन्हे हर प्रकार से सहायता नहीं देते हैं। ऐसे समय में कर्मचारीगण,

सलाह सहयोग देकर सहायता करते हैं। जगह जमीन सुरक्षा रखने के लिए यथा सम्भव अगुवाई देते हैं। जैसे पट्टा, बन्दोवस्ती करना पर्चो - खतियान निकालने के द्वारा से। रात्रि पाठशाला द्वारा अक्षर ज्ञान सिखा कर स्वयं राजनैतिक विषयों ~~स्वच्छ~~ और स्वास्थ्य सम्बन्धी बातों को बताकर समाज सेवा किये जाते हैं।

आमदनी:- मसीहियों की संख्या कम है। आर्थिक दशा अच्छी नहीं है। अतः वे अधिक समय काम धाम की खोज में गाँव और मंडली से बाहर ही रहते हैं। दान देने के विषय सुशिक्षा देने पर भी पेरिस की आमदनी कम है जोभी कि घड़ा/थैली है। मुट्ठी दान प्रायः देते हैं किन्तु नियमित रूप से नहीं इस तरह प्रतिमाह आमदनी ६० से १०० के अन्दर रहती है जो प्रति महिना केन्द्रीय कार्यालय किये जाते हैं

भविष्य को नजर रखते हुए मंडली के लिए - स्वपालित मंडली फंड के नाम से खजाना जमा किये जाते हैं। परन्तु अब तक हिसाब पेरिस में सेन्ट्रलाईज नहीं होने के वजह से सम्पूर्ण नहीं बताया जा रहा है।

आड़चनें:- हमारे क्षेत्र में गैरमसीहियों की एक भूल समझ है कि जो ख्रीस्तान होते हैं वे अपने जाति को खो देते हैं अर्थात मसीही होना को धर्म परिवर्तन नहीं पर जाति परिवर्तन समझते हैं इसलिए जहाँ कहीं धर्मखोजकों को बपतिस्मा होने बाद सामाजिक सुविधाओं से वंचित करने की कोशिश करते हैं। काम धाम में सहायता नहीं देते हैं। फलतः कितने लोग पुराने धर्म में वापस हो जाते हैं।

बहुत बार रोमी काथोलिकों की ओर से धर्मखोजकों को भड़काकर बिगाड़ते हैं। इस प्रकार से धर्मखोजक मसीही आर्थिक सहायता की चाह रखते हैं।

समास्याएं :— पेरिस के अन्दर जहाँ जहाँ हमारी मंडलियां स्थापित हो गई है। वहाँ पर पड़ती स्थानों में अस्थायी सेवालय बनाये गई थी किन्तु धीरे धीरे खराब होकर नष्ट हो गये अब: आंधी तुफान बर्षा काल में उपासना करने को कठिनाइयां होती है। अत: जमीन खरीदना और गिरजा घर डेरा घर की आवश्यकताएं है।

दूसरी कि शादी विवाह की समास्याएं मंडली २ में में है। एक तो लाइसेन्स पादरी की आवश्यकता है। और दूसरी जातियता की रूढ़ीवाद जौभी कि इनके विषय भाई बहिनों को सुसमझौता बराबर दिये जाते है। फिर अल्प मसीही होने के कारण सामाजिक रीति रिवाज संस्कृति से घिरे हुए है। अनियमित विवाह एवं विवाह विच्छेद की समास्याएं मंडलियों के लिए जटिल होते हुए आगे बढ़ रही है फिर भी ईश्वर की दया प्रतिदिन नये हृदय खोजकों की बपतिस्मा होती जा रही है। ईश्वर आपको हमारे क्षेत्र की उन्नति में सहायक होवे और आप लोग हमें प्रार्थनाओं में स्मरण करें कि ज्योति का प्रकाश आगे बढ़े।

प्रभु के आपका (विश्वासी)
सेवक,
पादरी आ. G. आर्थर
कानपुर

नकटी पेरिश का रिपोर्ट
(B.E.L. कर्मचारियों का वार्षिक शिक्षा क्लास के समय राँची में)

मान्यवर B.E.L. के डाइरेक्टर महोदय,
सुपरवाइजर गण तथा मेरे संगी कर्मचारियो
आपलोगों को नकटी पेरिश के भाई बहनों की ओर से
यीशुसहाय/
आपलोगों के सम्मुख नकटी पेरिश का संक्षिप्त रिपोर्ट इस प्रकार पेश किया जा रहा है/

पेरिश का क्षेत्र — नकटी पेरिश सिंहभूम जिले में चक्रधरपुर शहर से उत्तर बंदगाँव चक्रधरपुर, सोनुवा इन तीन प्रखण्डों में पूर्व से पश्चिम करीब 60 मील के विस्तृत मैदानी क्षेत्र में फैला हुआ है/ बरसात में बहुत ही कादो-किचड़ हो जाता है, जिससे दूर करने में बहुत ही कठिनाइयाँ होती हैं। इस क्षेत्र में अधिकांश हो" जाति के आदिवासी निवास करते हैं/ कहीं 2 संताली और उराँव आदिवासी भी हैं/ विशेष अभी तक में हो और संताल जाति से ही खृस्तान हुए हैं। इसके अलावे इस क्षेत्र में महतो, कुरमी, गोप जाति के लोग भी हैं/ तमड़िया जाति के लोग भी कहीं कहीं पर हैं/ इस क्षेत्र मे नकटी केन्द्र बना कर सन 1965 ई० से सुसमाचार प्रचार का कार्य चल रहा है/

नकटी पेरिश का मण्डलियाँ — नकटी पेरिश में निम्न लिखित 9 मंडलियाँ हैं—
नकटी, झींझीबहा, बोंगाजंगा, रोलाडीह, उदालकोम और कांडेदा ये मण्डलियाँ क्रमशः पूर्व की ओर हैं/ जोंको, पताहातु, बाइदेड़ा ये मण्डलियाँ क्रमशः पश्चिम की ओर हैं/ सबसे अधिक दूर की मण्डली बाइदेड़ा और पताहातु है, जो सोनुवा प्रखण्ड में पड़ता है, पेरिश केन्द्र से 30, 35 मील दूर हैं/ फिर पूर्व की ओर बोंगाजंगा, उदालकोम, कांडेदा मण्डली है, जो चक्रधरपुर प्रखण्ड में पड़ता है, पेरिश केन्द्र से 10, 15, 20 मील दूर है/ बाकी मण्डलियाँ नकटी के इर्द गिर्द 6, 7 मील की दूरी पर हैं/

P.T.O

मर्दुमसुमारी — मसीहियों का घर संख्या क्रमशः इस प्रकार है — शीशीबहा - 30 घर, बोंगाजंगा - 28 बाड़बेड़ा - 24, पताहातु 20, नकटी - 20, रोलाडीह - 18 जोको 12, उदालकोम 8, काड़ेदा 8 घर हैं। 33 गाँवों में हमारे मसीही परिवार रहते हैं। बीते वर्ष के मर्दुम-सुमारी के अनुसार पेरिश में घर संख्या - 148 हैं। कुल बपतिस्मा सं० 685 और दृढ़ीकृत सं० 291 है।

पेरिश के कर्मचारी — उपरोक्त मण्डलियों की सेवकाई तथा सुसमाचार प्रचार के लिए पेरिश में एक पादरी और 9 पूर्ण वेतनभोगी प्रचारक हैं, जो अपने अपने स्थानों में ~~एक~~ डेरा डाल कर कार्य में लगे हैं।

1980 का कार्य विवरण —

(क) धर्मखोजक बपतिस्मा :— जनवरी से अबतक में 128 (एक सौ अठाइस) धर्मखोजकों का पवित्र बपतिस्मा हुआ है। सबसे अधिक रोलाडीह और जोको मण्डली में धर्मखोजकों का बपतिस्मा हुआ। इसके बाद क्रमशः नकटी, पताहातु, शीशीबहा, बोंगाजंगा और काड़ेदा मण्डलियों में धर्मखोजक बपतिस्मा हुए। बाड़बेड़ा में सिर्फ एक धर्मखोजक भाई का बपतिस्मा हुआ। उदालकोम मण्डली में ही इस वर्ष धर्मखोजक बपतिस्मा नहीं हो सका नहीं तो सभी मण्डलियों में धर्मखोजकों का बपतिस्मा हुआ है।

(ख) ~~पेरिश~~ बालक बपतिस्मा — इस वर्ष पेरिश के अन्दर 15 (पंद्रह) बालकों का पवित्र हुआ। प्रायः सभी मण्डलियों में बालक बपतिस्मा था।

(ग) दृढ़ीकरण :— इस वर्ष 55 व्यक्तियों को दृढ़ीकरण दिया ~~है~~ गया है।

(घ) प्रभुभोज का अनुष्ठान — जनवरी से अबतक में 31 बार प्रभुभोज का अनुष्ठान किया गया, जिसमें 846 व्यक्तियों ने भाग लिया।

(ङ) घर मरम्मती — नकटी प्रचारक और पादरी डेरा मरम्मत किया गया है। ओओीबहा गिरजा घर और प्रचारक डेरा भी मरम्मत किया गया। पताहातु मण्डली में अस्थायी रूप में चेपेल बनाया गया है।

(च) जमीन बन्दोबस्ति :— पताहातु मण्डली में गिरजा घर और प्रचारक डेरा बनाने के लिए करीब 46 डि० जमीन 630 रुपया में खरीदा गया है।

(छ) रोलाडीह मण्डली में गिरजा घर बनाने के लिए लकड़ी खरीदा गया है, लेकिन अभी तक जमीन नहीं खरीदे हैं।

पेरिश का जायदाद :— ओओीबहा, और बोंगाजंगा मण्डली में जमीन का पक्का बन्दोबस्त है। अन्य मण्डलियों में नकटी, उदालकोम काड़ेदा:, बाड़बेड़ा, पताहातु में जमीन खरीदा तो गया है, परन्तु कोर्ट में रजिष्ट्री नहीं हुआ है। गाँव में ही लिखापढ़ी हुआ है।

गिरजा घर — नकटी, ओओीबहा, बोंगाजंगा, उदालकोम, काड़ेदा:, बाड़बेड़ा में गिरजा घर बनाया गया है। पताहातु में अस्थायी चेपेल बनाया गया है।

डेरा घर — नकटी में पादरी-प्रचारक डेरा घर, ओओीबहा, बोंगाजंगा, काड़ेदा:, बाड़बेड़ा में प्रचारक डेरा घर बना है। पताहातु में डेरा घर अस्थायी बना है। उदालकोम, रोलाडीह, जोंको में प्रचारक परिवार भाइयों के घरों में किसी तरह रहते हैं।

कब्रस्थान — नकटी मण्डली में सिर्फ कब्रस्थान जमीन खरीदा गया है। अन्य मण्डलियों में नहीं है।

विकास के कार्य —

आत्मिक दशा :- मण्डलियों की आत्मिक दशा बहुत अच्छी नहीं है। कुछ लोगों में गिरजा आना जाना ढिलाई, मतवालेपन, आपसी मनमुटाव, पारिवारिक झगड़ा देखने को मिलता है। दान-देन तो देते हैं, फिर भी उसमें कुछ लोग बहुत ढिलाई हैं। आत्मिक दशा सुधारने के लिए कर्मचारियों की ओर से कोशिश जारी है। गिरजा उपदेश के अलावे प्रश्नोत्तरी, गिरजा, माता समाज, युवा समाज, सन्डे स्कूल होता है। सप्ताह के बीच में कर्मचारीगण घर-घर मुलाकात करते हैं विन्ती प्रार्थना के समय कुछ वचन भी सिखाते हैं। सप्ताह में एक या दो बार टोला समाज भी ठहराया जाता है। इसके अलावे हमने किसी किसी मण्डली में पंच संगठन भी किया है और सब मण्डलियों में पंच संगठन का कोशिश है।

आर्थिक दशा — इस साल आर्थिक दशा बहुत ही सोचनीय था परन्तु इस साल का खेती अच्छा ही दीख रहा है। हमारे लोग विशेषकर धान की खेती करते हैं। परन्तु हम कर्मचारीगण उनको बागवानी साग सब्जी की खेती के लिए चलाते हैं और खुद भी खेती करके सिखाते हैं। पैरिश के मिशन जमीनों में फलदायी गाछ वृक्ष भी लगाने-बढ़ाने का प्रयास है।

रात्रिपाठशाला — नकटी, शीशीबहा, उदालकोम, काईदा, बड़केड़ा, पताहातु मण्डली में रात्रिपाठशाला अच्छी तरह चल रहा है। रोलाईह में पूरा धूपकाल में रात्रिपाठशाला चला, परन्तु बरसात पहुँचने से रात्रिपाठशाला बंद कर दिया गया क्योंकि घर नहीं है। पर अब फिर शुरु होगा। बोंगातेंगा मण्डली में रात्रिपाठशाला नहीं है। जोंको मण्डली में तो अभी हाल ही में प्रचारक पूर्णवेतन भोगी होकर वहाँ डेरा किया है। नकटी मण्डली का रात्रिपाठशाला को चलाने में पंचायत की ओर से भी कुछ सहायता मिलती है।

P. T. O.

सुसमाचार प्रचार कार्य के तौर तरीके —

व्यक्तिगत प्रचार :— मण्डली के भाई-बहनों को प्रचार कार्य के लिए उत्साहित किया जाता है। वे अपने सगे सम्बन्धियों तथा पड़ोसियों को प्रभु के पास लाते है। इसके साथ ही साथ कर्मचारीगण गैर मसीहियों से मिलते जुलते बातचीत करते, दुःख बीमारी में सेवा सुश्रुषा करते हुए प्रचार करते हैं।

सामूहिक प्रचार :— कभी कभी पेरिश के कर्मचारीगण तथा भाई-बहने किसी टोली में जाकर नाच गान करते तथा भीड़ जमा होने पर साक्षी देते है। इस साल इस तरह का सामूहिक प्रचार चर्चखोलों के प्रतिष्ठा के समय यहाँ वहाँ किया गया।

पेरिश मिटिंग :— पेरिश मिटिंग प्रतिमाह के अंत में बैठते हैं। मिटिंग में कभी कभी पंचगण भी बुलाये जाते है। मण्डली रिपोर्ट लिया जाता, समस्याओं पर बातचीत होती, अगले माह के लिए काम का प्रोग्राम बनाया जाता है। उपदेश तैयारी भी दिया जाता है। पेमेन्ट और सेन्ट्रालाइज भी होता है।

मण्डली आमदनी :— जनवरी से अगस्त तक मण्डली आमदनी इस प्रकार है, जो सेन्ट्रालाइज किया गया है —

(1) जनवरी - Rs. 313=56
(2) फरवरी — Rs. 289=21
(3) मार्च — Rs. 244=00
(4) अप्रैल - Rs. 266=26
(5) मई — Rs. 316=07
(6) जून - Rs. 283=56
(7) जुलाई - Rs. 228=75
(8) अगस्त Rs. 311=99

कुल योग — Rs. 2252=90

आवश्यकता –

(क) सीकीदीकीर में एक प्रचारक रखने की आवश्यकता है क्योंकि रोलाडीह 5 मील दूर पड़ता है। वहाँ मसीही परिवार 3 घर है। अनेक धर्मखोजक निकल रहे हैं। 3 घर धर्मखोजक बपतिस्मा के लिए तैयार है। इसी माह उनका बपतिस्मा हो जायेगा। वहाँ का केश उठा दिया गया। अब काम बढ़ने की उम्मीद है। सो वहाँ एक प्रचारक बहाली किया जाना आवश्यक है।

(ख) रोलाडीह में गिरजाघर के लिए लकड़ी खरीदा गया है। वहाँ मण्डली की बढ़ती को देखते हुए इसी साल जमीन खरीदने, गिरजा घर और प्रचारक डेरा बनाने की आवश्यकता है। उदालकोम में प्रचारक डेरा बनाने की आवश्यकता है। फिर पताहातु में खरीदा हुआ जमीन में बहुत जल्दी घर बनाने की आवश्यकता है। जोंको मण्डली के लिए जमीन खरीदने तथा घर बनाने की आवश्यकता है।

(ग) रोलाडीह, पताहातु और जोंको मण्डली के लिए घंटी खरीदने की आवश्यकता है।

समस्या :–

भीतरी समस्या :– नकटी मण्डली में व्यभिचार गर्भपात्या के कारण और बाइबेड़ा मण्डली में आपसी मनमुटाव के कारण कुछ समस्या है।

बाहरी समस्या :– इस साल बाहरी समस्या सताहट आदि नहीं है। अभी हाल के उलगुलान

धर पकड़ में इस क्षेत्र के सब लोग भयभीत थे। अनेक लोग पकड़े गये है। परन्तु ईश्वर का धन्यवाद हो कि हमारे लोगों में से कोई नहीं पकड़ाया गया है।

अंत में आप लोगों से अर्जी है कि अपनी प्रार्थनाओं में नकटी फेरिश को भी याद करें कि ईश्वर इस क्षेत्र के कामों पर आशीष देवे।

आपलोगों का संगी कर्मचारी.

Rev. H. Hansda,
Nakti
1 ·10·80

नकटी पेरिश का रिपोर्ट
(B.E.L. कर्मचारियों का वार्षिक शिक्षा क्लास के समय राँची में)

मान्यवर B.E.L. के डाइरेक्टर महोदय,
सुपरवाइज़रगण तथा मेरे संगी कर्मचारियों,
आपलोगों को नकटी पेरिश के ~~कर्मचारिय~~ भाई-बहनों की ओर से यीशु सहाय।

आप लोगों के सम्मुख नकटी पेरिश का संक्षिप्त रिपोर्ट इस प्रकार पेश किया जा रहा है।

पेरिश का क्षेत्र :— नकटी पेरिश सिंहभूम जिले में चक्रधरपुर शहर से उत्तर बंदगाव, चक्रधरपुर, सोनूवा, इन तीन प्रखण्डों में पूर्व से पश्चिम करीब 60 मील के विस्तृत मैदानी क्षेत्र में फैला हुआ है। बरसात में बहुत ही कादो-किचड़ हो जाता है जिससे दूर करने में बहुत ही कठिनाइयाँ होती हैं। इस क्षेत्र में अधिकांश "हो" जाति के आदिवासी निवास करते हैं। कहीं-कहीं संताली और उराँव आदिवासी भी हैं। विशेषकर अभी तक में 'हो' और 'संताल' जाति से ही खृस्तान हुए हैं। इसके अलावे इस क्षेत्र में महतो, कुरमी, गोप जाति के लोग भी हैं। तमड़िया जाति के लोग भी कहीं २ पर हैं। इस क्षेत्र में नकटी केन्द्र बना कर सन 1965 ई० से सुसमाचार प्रचार का कार्य चल रहा है।

नकटी पेरिश की मण्डलियाँ :— नकटी पेरिश में निम्न लिखित 9 मण्डलियाँ हैं :—

नकटी, भीभीबेडा, बोगाजेगा, रोलडीह, उदालकीम और काडेढ़ा: ये मण्डलियाँ क्रमशः पूर्व की ओर हैं। जोंको, पताहातु और बाइवेड़ा ये मण्डलियाँ क्रमशः पश्चिम की ओर हैं। सबसे अधिक दूर की मण्डली बाइवेड़ा और पताहातु हैं, जो सोनूवा प्रखण्ड में पड़ता है, पेरिश केन्द्र से 30, 35 मील दूर है। फिर पूर्व की ओर बोगाजेगा,

उदालकोम, काड़ेदा: मण्डली है, जो पत्थरपुर प्रखण्ड में पड़ता है, पैरिश केन्द्र से 10, 15, 20 मील दूर है। बाकी मण्डलियाँ नकटी के इर्द गिर्द 6, 7 मील की दूरी पर हैं।

मर्दुमसुमारी :— मसीहियों का घर संख्या क्रमशः इस प्रकार है — शीशीबहा - 30 घर, बोंगाजंगा 28, बाड़बेड़ा 24, पताहातु 20, नकटी 20, रोलाडीह 18, जोंको - 12, उदालकोम - 8, काड़ेदा: 8 घर हैं। 33 गाँवों में हमारी मसीही परिवार रहते हैं। बीते वर्ष के मर्दुमसुमारी के अनुसार पैरिश में घर संख्या 148 है। कुल बपतिस्मा सं० 685 और दृढ़ीकृत सं० 227 है।

पैरिश के कर्मचारी — उपरोक्त मण्डलियों की सेवकाई तथा सुसमाचार प्रचार के लिए पैरिश में एक पादी और 9 पूर्ण वेतनभोगी प्रचारक हैं, जो अपने-अपने में डेरा डाल कर कार्य में लगे हैं।

1980 का कार्य विवरण :—

(क) धर्मखोजक बपतिस्मा — जनवरी से अब तक में 128 (एक सौ अठाइस) धर्मखोजकों का पवित्र बपतिस्मा हुआ है। सबसे अधिक रोलाडीह और जोंको मण्डली में धर्मखोजकों का बपतिस्मा हुआ। इसके बाद क्रमशः नकटी, पताहातु, शीशीबहा, बोंगाजंगा और काड़ेदा: मण्डलियों में धर्मखोजक बपतिस्मा हुए। बाड़बेड़ा में सिर्फ एक धर्मखोजक भाई का बपतिस्मा हुआ। उदालकोम मण्डली में भी

P.T.O.

इस वर्ष धर्मखोजक वपतिस्मा नहीं हो सका। नहीं तो सभी मण्डलियों में धर्मखोजकों का वपतिस्मा हुआ है।

(ख) बालक वपतिस्मा — इस वर्ष पैरिश के अन्दर 15 (पंद्रह) बालकों का पवित्र वपतिस्मा हुआ है। प्राय: सभी मण्डलियों में बालक वपतिस्मा था।

(ग) हस्तापन :— इस वर्ष 55 व्यक्तियों को हस्तापन दिया गया है।

(घ) प्रभुभोज का अनुष्ठान :— जनवरी से अब तक में 39 बार पवित्र प्रभुभोज का अनुष्ठान किया गया जिसमें 846 व्यक्तियों ने भाग लिया।

(ङ) घर मरामती :— नकटी प्रचारक और पादरी डेरा मरामत किया गया है। शीशीबहा गिरजा घर और प्रचारक डेरा भी मरामत किया गया। पताहातु मण्डली में अस्थायी रूप में चैपेल बनाया गया है।

(च) जमीन बन्दोबस्त :— पताहातु मण्डली में गिरजा घर और प्रचारक डेरा बनाने के लिए करीब 46 डि० जमीन 630 रुपया में खरीदा गया है।

(छ) रोलाडीह मण्डली में गिरजा घर बनाने के लिए लकड़ी खरीदा गया है, लेकिन अभी तक जमीन नहीं खरीदे हैं।

P.T.O.

पैरिश का जयदाद :— श्रीश्रीबहा और बोंगाजंगा मण्डली में जमीन का पक्का बन्दोबस्त है। अन्य मण्डलियों में नकटी, उदालकोम, काड़ेदाः, बाड़बेड़ा, पताहातु में जमीन खरीदा तो गया है, परन्तु कोर्ट में रजिस्ट्री नहीं हुआ है। गाँव में लिखा पढ़ी हुआ है।

गिरजा घर :— नकटी, श्रीश्रीबहा, बोंगाजंगा, उदालकोम, काड़ेदाः, बाड़बेड़ा में गिरजा घर बनाया गया है। पताहातु में अस्थायी चेपेल बनाया गया है।

डेरा घर :— नकटी, ~~श्रीश्रीबहा~~, में ~~बोंगाजंगा~~ पादरी-प्रचारक डेरा घर श्रीश्रीबहा, बोंगाजंगा, काड़ेदाः बाड़बेड़ा में प्रचारक डेरा घर बना है। पताहातु में डेरा घर अस्थायी बना है। उदालकोम, रोलाडीह, जोको में प्रचारक परिवार भाइयों के घरों में किसी तरह ~~से~~ रहते हैं।

कब्रस्थान :— नकटी मण्डली में सिर्फ कब्रस्थान जमीन खरीदा गया है। अन्य मण्डलियों में कब्रस्थान नहीं है।

विकास के कार्य —

आर्थिक दशा :— मण्डलियों की आर्थिक दशा बहुत अच्छी नहीं है। कुछ लोगों में गिर्जा आना जाना ढिलाई मतवालपन, आपसी मन मुटाव पारिवारिक झगड़ा देखने को मिलता है। दान-देन तो देते हैं, फिर भी उसमें कुछ लोग

बहुत दिखाई है। आत्मिक दशा सुधारने के लिए कर्मचारियों की ओर से कोशिश जारी है। गिरजा उपदेश के अलावे, प्रश्नोत्तरी गिरजा, माता समाज, युवा समाज, सन्डे स्कूल होता है। सप्ताह के बीच में कर्मचारीगण घर-घर मुलाहिजा करते हैं, विन्ती प्रार्थना के समय कुछ वचन भी सिखाते हैं। सप्ताह में एक या दो बार टोला समाज भी ठहराया जाता है। इसके अलावे हमने किसी किसी मण्डली में पंच संगठन भी किया है और सब मण्डलियों में पंच संगठन का कोशिश है।

आर्थिक दशा :- इस साल आर्थिक दशा बहुत ही सोचनीय था, परन्तु इस साल का खेती अच्छा ही दीख रहा है। हमारे लोग विशेषकर धान की खेती करते हैं। परन्तु हम कर्मचारीगण उनको बागवानी साग सब्जी की खेती के लिए चलाते हैं और स्वयं भी खेती करके सिखाते हैं। पेरिश के मिशन जमीनों में फलदायी गाछ वृक्ष भी लगाने-बढ़ाने का प्रयास है।

रात्रिपाठशाला — नकटी, श्रीश्रीबहा, उदालकोम, काड़दा:, बाकेड़ा, पतामातु मण्डली में रात्रिपाठशाला अच्छी तरह चल रहा है। टोलाई में इस धूपकाल में रात्रिपाठशाला चला, परन्तु बरसात पहुँचने से रात्रिपाठशाला बंद कर दिया गया, क्योंकि घर नहीं है। पर अब फिर शुरू होगा। बोंगाडोंगा मण्डली में रात्रिपाठशाला नहीं है। जोंको मण्डली में तो अभी हाल ही में प्रचारक पूर्ण वेतन भोगी होकर ~~ठहरता है~~ दिया किया है। नकटी मण्डली

P.T.O.

का रात्रि पाठशाला को चलाने में पंचायत की ओर से भी कुछ सहायता मिलती है।

सुसमाचार प्रचार के तौर तरीके :—

व्यक्तिगत प्रचार :— मण्डली के भाई बहनों को प्रचार कार्य के लिए उत्साहित किया जाता है। वे अपने सगे सम्बन्धियों तथा पड़ोसियों को प्रभु के पास लाते है। इसके साथ ही साथ कर्मचारीगण गैर मसीहियों से मिलते जुलते, बातचीत करते, दुःख बीमारी में सेवा ~~सुश्रू~~ सुश्रुषा करते हुए प्रचार करते है।

सामूहिक प्रचार :— कभी कभी पैरिश के कर्मचारीगण तथा भाई-बहनें किसी टोली में जाकर नाच गान करते तथा भीड़ जमा होने पर साक्षी देते हैं। इस साल इस तरह का सामूहिक प्रचार चर्चवेदलों के बपतिस्मा के समय यहाँ वहाँ किया गया।

पैरिश मिटिंग :— पैरिश मिटिंग प्रतिमाह के अंत में बैठते हैं। मिटिंग में कभी कभी पंचगण भी बुलाये जाते है। मण्डली रिपोर्ट लिया जाता, समस्याओं पर बातचीत होती, अगले माह के लिए काम का प्रोग्राम बनाया जाता है। उपदेश तैयारी भी दिया जाता है। पेमेन्ट और सेन्ट्रालाइज भी होता है।

P.T.O.

मण्डली आमदनी :— जनवरी से अगस्त तक मण्डली आमदनी इस प्रकार है, जो सेन्ट्रालाइज किया गया है :—

(1) जनवरी Rs. 313=56
(2) फरवरी Rs. 289=21
(3) मार्च Rs. 244=00
(4) अप्रेल Rs. 266=26
(5) मई Rs. 316=07
(6) जुन Rs. 283=56
(7) जुलाई Rs. 228=75
(8) अगस्त Rs. 311=49

कुल योग — Rs. 2252=90

आवश्यकता —

(क) सीकीदीकीर में एक प्रचारक रखने की आवश्यकता है' क्योंकि रोलाडीह 5 मील दूर पड़ता है। वहाँ मसीही परिवार 3 घर है। अनेक धर्मखोजक निकल रहे हैं। 3 घर धर्मखोजक बपतिस्मा के लिए तैयार हैं। इसी माह उनका बपतिस्मा हो जायेगा। वहाँ का क्षेत्र उठा उठा दिया गया। अब काम बढ़ने की उम्मीद है। सो वहाँ एक प्रचारक बहाली किया जाना आवश्यक है।

P.T.O.

(ख) रोलाडीह में गिरजा घर के लिए लकड़ी खरीदा गया है। वहाँ मण्डली की बढ़ती को देखते हुए इसी साल जमीन खरीदने, गिरजा घर और प्रचारक डेरा बनाने की आवश्यकता है। उधन्त कोम में प्रचारक डेरा बनाने की आवश्यकता है कि पताहातु में खरीदा हुआ जमीन में बहुत जल्दी घर बनाने की आवश्यकता है। जोंको मण्डली के लिए जमीन खरीदने तथा घर बनाने की आवश्यकता है।

(ग) रोलाडीह, पताहातु और जोंको मण्डली के लिए घंटी खरीदने की आवश्यकता है।

समस्या —

भीतरी समस्या :— नकटी मण्डली में व्यभिचार गर्भावस्था के कारण और बाइकेड़ा मण्डली में आपसी मनमुटाव के कारण कुछ समस्या है।

बाहरी समस्या :— इस साल बाहरी समस्या सताहट आदि नहीं है। अभी हाल के उल्गुलान धर पकड़ में इस क्षेत्र के सब लोग भयभीत थे। अनेक लोग पकड़े गये हैं। परन्तु ईश्वर का धन्यवाद हो कि हमारे लोगों में से कोई नहीं पकड़ाया है।

अंत में आप लोगों से अर्जी है कि अपनी प्रार्थनाओं में नकटा पेरिश को भी याद करें कि ईश्वर इस क्षेत्र के कामों पर आशीष देवे।

आपलोगों का संगी कर्मचारी
Rev. H. Hansda
Nakti
1-10-80

राँची में दिनांक 16 से 19 तक, मिशन क्षेत्र के कर्मचारियों का शिक्षा क्लास के अवसर पर जगन्नाथपुर पेरिस का वार्षिक संक्षिप्त रिपोर्ट 1980।

महामान्यवर बी॰ ई॰ एल॰ डाइरेक्टर महोदय, प्रचल प्रचल सुपरिन्टेंडेंटगण तथा मेरे सभी संगी कर्मचारियों को जगन्नाथपुर पेरिस की ओर से योशुसहाय।

महाशय आप लोगों के समक्ष जगन्नाथपुर पेरिस का संक्षिप्त रिपोर्ट इस प्रकार किया जाता है।

क्षेत्र का परिचय :— जगन्नाथपुर पेरिस का क्षेत्र बिहार प्रान्त के सिंहभूम जिला में चाईबासा से दक्षिणी भूभाग पर फैला हुआ है। इस क्षेत्र में अधिकांश हो जाति के लोग वास करते हैं। इसके बाद उड़िया लोगों की है। कहीं कहीं पर मुण्डा उराँव लोग भी हैं। इस क्षेत्र में चीनी मिट्टी, लोहा, पत्थर, सिमेंट पत्थर के अनेक खदानें हैं। इसलिये दक्षिणी कोल्हान खदानों का क्षेत्र कहा जाता है।

जगन्नाथपुर पेरिस के अन्तर्गत नौ छोटे छोटे मंडलियाँ हैं। जो क्रमशः इस प्रकार हैं। (1) जगन्नाथपुर (2) कराजिया (3) हेससाली (4) रामसाई (5) तन्तापुर (6) जोडाबेड़ा (7) गड़ासाई (8) बरकुरा (9) हतनाबेड़ा

1) जगन्नाथपुर :— यह मंडली पेरिस का केन्द्र भी है। इस मंडली में मुण्डा उराँव और हो जाति के भाई बहनें हैं। यहाँ का परवार सं॰ 20 बपतिस्मा सं॰ 95 दृढ़ीकृत सं॰ 40 हैं। यहाँ प्रचारक एलेम सामद हैं।

(2) कराजिया :— यहाँ चीनी मिट्टी का खदान है। यहाँ तीन परिवार मसीही भाई बहनें रहते हैं।

विश्व II यह जगन्नाथपुर से पूर्व 12 किलोमीटर की दूरी पर है। शुक्रवार को यहाँ गिरजा आराधना किया जाता है। क्योंकि उसी रोज साप्ताह का छुट्टी दिन भी है। यहाँ का बपतिस्मा सं० 12 दृढ़ीकृत सं० 5 है। यह मंडली भी प्रचारक एनेम समद के अधीन है।

(3) हेरूसाही :- यह एक नयी मंडली है। यहाँ का परिवार सं० 20 बपतिस्मा सं० 41 दृढ़ीकृत सं० 27 है। यहाँ प्रचारक बेन्यमीन सोय है। यहाँ सब के सब हो जाति के लोग हैं।

(4) रामसाई :- यहाँ घर सं० 7 बपतिस्मा सं० 57 दृढ़ीकृत सं० 30 है।

(5) तलाबुरु :- यहाँ घर सं० 2 बपतिस्मा सं० 18 दृढ़ीकृत संख्या 7 है। इन दोनों मंडलियों की दूरी 3-4 मील की है। दोनों मंडलियों की सेवकाई प्रा० हरकुजन तोपनो करते हैं।

(6) जोजोबेड़ा :- घर सं० 3 बपतिस्मा सं० 30 दृढ़ीकृत सं० 9 है। यहाँ प्रचारक थोमस्त सिंकू है। यहाँ पर 14 सितम्बर से एक विशेष समस्या उठ खड़ी हुई है। वह इस प्रकार है। यहाँ का एक भाई जिसका नाम समसोन तमसोय है अपना दखल पेड़ों पर रेशम कीड़ा पाला हुआ है। उसी के नजदीक उसी के पेड़ों पर गाँव का दूसरा संसार भाई बिना पूछे अपना रेशम कीड़ा चढ़ा दिया। तब समसोन भाई भी बिना पूछे उसके ~~कीड़ा~~ कीड़ों को दूसरे तरफ के पेड़ों पर चढ़ा दिया। यही कारण था कि गाँव के संसार भाई लोग जमा होकर पकड़ और मार। और उससे एक खस्सी और 150 रु० जबर्दस्त वसूल करना चाहे। खस्सी तो उसने दे दिया पर पैसा नहीं रहने के कारण

नहीं दिया। इसी बीच वह भाई-ग्राम पंचायत में केश को पहुंचा दिया। अब केश ग्राम पंचायत के प्रधान हैं। इस प्रकार यहाँ के भाई-बहनों को दूसरे रूप से सताया जा रहा है।

(7) जड़ासाई — यहाँ एक ही परिवार है जिसमें 7 जनों को पवित्र बपतिस्मा हुआ है। हृदीकृत 2 है इससे तीन-चार मील की दूरी पर सिलपुंजी मंडली थी। पर कितनों को दूसरे जगह पर बदली हुआ और कितने खदान की ओर चले गये। जिससे यह मंडली बन्द सा हो गया है। यहाँ भी कारनेलियुस सिंकु है।

(8) बरकुरा — बताया जाता है, यहाँ सात परिवार थे पर अब एक ही परिवार रह गया है।

(9) हतनाबेड़ा — बरकुरा से 7-8 मील की दूरी पर हतनाबेड़ा मंडली है। यहाँ भी कितने खदान की ओर चले गये और कितने उलट गये, जिससे अब केवल एक परिवार ही रह गया है। दोनों जगह भाई जोहनेस मेलगांडी देख भाल करते हैं।

इस प्रकार पेरिश के अन्दर एक पादरी वाले पूरा वेतन भोगी प्रचारक हैं। पूरे पेरिस के अन्दर परिवार सं 67 बपतिस्मा सं 345 हृदीकृत सं 139 है। अफसोस की बात है कि इन साल समाजिक और राजनैतिक अड़चनों के वजह से केवल दो धर्मखोजकों को पवित्र बपतिस्मा दिया जा सका है। बल्कि बपतिस्मा व व्यस्क सं० 1 ही। अब तक मंडलियों में एक बार पवित्र प्रभुभोज बांटा जा सका है।

देश में धर्म खोजक हैं पर समय-समय पर ऐसा घटना घटते आया। जिसको देख सुन कर वे सब

IV

चुप चाप हो गये हैं। मई महीना में जगन्नाथपुर और नवामुन्डी के B.D.O दोनों को बदल गया। जून महीना जैतगाई के पोस्टमास्टर और पियोन दोनों को बदली मिला। फिर जगन्नाथपुर हाई-स्कूल के प्रिन्सपाल साहब को अगस्त महीना बदल गया। इन घटनाओं के पीछे खिस्तानों का हाथ है ऐसा प्रचार होने लगा। इस लिये जगन्नाथपुर चर्च को घेरने का विचार था। पर ईश्वर को धन्यवाद होवे ऐसा नहीं हुआ। पर C.I.D हमारे पीछे लगा हुआ है। फिर गुवा और नवामुंडी में जो दंगा हुआ, वह भी ईसाइयों का षड़यंत्र कहा जाने लगा है।

मिशन जायदाद :— जगन्नाथपुर, बरबुरा, हेस्साथी और रूम साई में थोड़ा बहुत मिशन जमीन है। जिसमें गिरजा घर तथा प्रचारक डेरा घर बनाया गया है। बाकी जगहों पर मिशन का कुछ भी नहीं है।

सुसमाचार प्रचार के तौर तरीके :— इस साल अगस्त महीना में जगन्नाथपुर मंडली के पतारुलु ग्राम में सामूहिक रूप से धर्ममेला का आयोजन किया गया। जो काफी सफल रहा। गांव के लोग बिहान तक बात सुनने और गीत भजन देखने के लिये बैठे रहे।

सुसमाचार प्रचार का काम व्यक्तिगत भेंट-मुलाकात, दवा दारू, सेवा सहा के माध्यम से किया जाता है।

आर्थिक दशा :— भाई बहनों की आर्थिक दशा अच्छी नहीं है। इस लिये बोध-बोध में मिशन मिशन से कुछ पाने की आशा करते हैं। क्योंकि

V

R.C. वाले कुछ-कुछ देते रहते हैं। जौमी पेरिस की ओर से फलदाई वृक्ष, बागवानी, मुर्गीपालन आदि के करने के लिये सुझाव दिया जाता है।

आत्मिक दशा :- पेरिस के अन्दर आत्मिक दशा भी अच्छी नहीं है। अभी तक मंडलियों में अन्धविश्वास, मतवालापन रखना रखनी, आदि पाप देखने को मिलता है। सुधारने के लिये वेतासभा प्रश्नोत्तर शिक्षा, व्यक्तिगत बात चीत और रात्रीपाठशाला की ओर से कोशिश की जा रही है। पर सफलता नहीं मिली है।

रात्रीपाठशाला :- प्रायः सभी मंडलियों में रात्रीपाठशाला चलाया जाता है।

सन्डेस्कूल :- दो मंडलियों में सन्डेस्कूल चलाया जाता है। बाकी मंडलियों में भी कोशिश जारी है।

युवा मंडल :- जहाँ जहाँ जवान युवती लोग हैं वहाँ युवा मंडल चलाने की कोशिश है।

पेरिश बैठकी :- हर महीना, महीना के पहिला साप्ताह पेरिस बैठकी भिन्न-भिन्न मंडलियों में हुआ करती है। बैठकी में मंडली रिपोर्ट, मंडली समस्य कार्य रिपोर्ट आदि पर बात विचार किया जाता है। तथा उपदेश तैयारी, आलोचना क्लास, गीत भजन आदि सिखाया जाता है।

पेरिस समस्या :- बीते महीना सितम्बर महीना प्रायः सभी कर्मचारी बिमार दशा में थे। जिससे कहीं कहीं

दो तीन एतवार गिरजा आराधना नहीं चलाया जा सका।

पैरिश आमदनी :—

जनवरी	221.07
फरवरी	250.38
मार्च	150.25
अप्रैल	162.24
मई	184.59
जून	143.65
जुलाई	154.72
अगस्त	126.72
	1393.62

जुलाई महीना तक का कोटयकरता किया गया है।

पेरिश की आवश्यकता :—

(1) जगन्नाथपुर के एक कुंआ की अति आवश्यक है, क्योंकि गर्मी के दिनों जल मिलना अति कठिन हो जाता है।

(2) हेसाबी और रामसाई का गिरजा घर अधूरा है, उसे पूरा करना जरूरी है।

(3). रामसाई के प्रचारक डेरा घर की अति आवश्यक है।

(4) जोजोबेड़ा के लिये घंटी की आवश्यकता है।

—प्रभु में आप लोगों का विश्वासी

—पादरी के॰ जी॰ केरकेटा

जगन्नाथपुर

कानपुर पेरिस की वार्षिक प्रतिवेदन

१९८०

महा मन्यवार

बी ई० एल० संचालक रांची,

द० पू० अंचल आध्यक्ष कदमा खुंटी,

द्वारा क्षेत्रिय सुपरनैजर जो० ई० एल० सी० चाईबासा तथा उपस्थित सभी कर्मचारियों को कानपुर पेरिस की ओर से यीशु सहाय।

महाशय,

परिचय:- मैं कानपुर पेरिस की संक्षिप्त प्रतिवेदन पेश करता हूँ। कानपुर पेरिस कानपुर नामक ग्राम में बसा हुआ है यह हवड़ा द० पू० रेलवे लाइन। खड़गपुर जंक्शन से ३५ किलोमीटर दक्षिण बेलदा और बेलदा और बेलदा से ५ किलो मीटर पश्चिम कच्ची सड़क के किनारे पड़ता है। उड़ीसा टैंक रोड बेलदा से दांतन तक दोनों ओर पूरब और पश्चिम में मंडलियाँ अवस्थित है। फिलहल ६ छोटी २ मंडलियाँ है जहाँ पर ४ अर्द्धवेतन ५ पूर्णवेतन प्रचारक और एक पादी सुसमाचार प्रचार कार्य में लगे हैं। १९७९ के मर्दुमसुमारी के अनुसार घर संख्या ७५ परिवार बपतिस्मा संख्या ३६४ और हस्तिकृत संख्या ९६ रही इन साल नये हस्तिकृतों के साथ १०६ हुए

मिशन जायदाद:- कानपुर, ख्रिष्टोनगर, मालयामुना, सुरसा मनोकिडंगा में थोड़ी थोड़ी जमीन खरीदी गई है। कानपुर में स्थायी डेरा और गिरजा घर है। इसी प्रकार मालयामुना, मनोडंगा में और ख्रिस्टोनागर में स्थायी डेरा घर है बाकी स्थानों में जमीन तथा उपासनालय नहीं है। बर्तमान झोपड़ियों में और कहीं कहीं भाइयों के घरों में ही उपासना चलाया जा रहा है।

सुसमाचार कार्य:- हमारे क्षेत्र में सुसमाचार का काम आपसी संगति भेंट मुलाकत, पर्चों के वितरण दवा दारुओं की सेवाकाई के माध्यम से किया जाता है। समय समय पर धर्ममेला का आयोजन किया जाता है। इन साल दो बार धर्ममेला हुई। इन साल अब तक में ३ परिवार और व्यक्तिगत रुप से १६ जनों का पवित्र बपतिस्मा सम्पन्न हुआ है। फिर कुछ धर्मखोजक है जिनको बपतिस्मा नहीं दिया जा सका है।

८ प्रतिमाह कर्मचारियों का पेरिस बैठकी होती है। जिसको मंडली रिपोर्ट संगीत उपदेश तैयारी प्रचारक और प्रचारकों के काम आराधना सीखते और सिखाये जाते है। मंडलियों के समस्याओं पर एक साथ विवेचना करते है और एक साथ मिलकर उपस्थित समस्यों को सुलझाने का प्रयत्न करते हैं। सभी ~~कर्मचारियों~~ कर्मचारीगण अनेक प्रकार की कठिनाइयों के होते हुए भी अपने काम में प्रयत्नशील है।

लौकिक और आत्मिक जीवन:—

हमारे पेरिस के अन्दर विभिन्न जाति के लोग मसीही है। उनमें कोड़ा मुन्डा, मुन्डा संथाली व मुन्डा और बंगाली विशेष है। ये आदिवासी है और मुख्यपेशा खेती बारी एवं कुली बनिहार है। अधिकतर लोग गरीब है कितने भाई बहिनों का अपना निज जमीन जगह नहीं है ये पड़ती जगहों में तथा दूसरे लोगों के जगहों में रहते हैं वे अपने जीविका के लिए प्रतिदिन कुली बनिहार करते है। अधिकतर भाई बहनें जीविका की खोज में महीनों वर्षों तक बाहर ही रहते है। दूसरी ओर कुछ मसीही ऐसे हैं जो धनी हैं वे भी स्वार्थ काम में उलझे रहते हैं गिरजा कम आते हैं। इस तरह लौकिक दृष्टिकोण से अधिकतर आर्थिक अवस्था खराब तथा सोचनीय है।

अतः गिरजा उपस्थिति माध्यम रहती है। क्योंकि बहुधा आर्थिक अच्छी नहीं होने के कारण रोजी रोटी ~~की लिए~~ खोज में दूर दूर चले जाते हैं और कई दिनों महिनों तक बाहर ही रहते है। इसलिए उनको सेवा शुद्धि शिक्षा दीक्षा देने में कठिनाइयां होती है। क्षेत्र में प्रचार करते हुए भी मतवालापन व्यभिचार, अविश्वास का पाप है। आत्मिक सेवकाई के लिए प्रोग्राम के मुताबिक प्रत्येक मंडलियों में पवित्र प्रभुभोज बाँटा जाता है।

समाज सेवा कार्य:—

अल्प संख्यक मसीही होने के कारण गैर मसीही लोग हर प्रकार से सहायता नहीं देते हैं। ऐसे समय में कर्मचारीगण उन्हें सलाह सहयोग देकर सहायता करते हैं। जगह जमीन सुरक्षा रखने के लिए यथा सम्भव अगुवाई देते हैं।

जैसे परचा बन्दोबस्ती करना पर्चा खतियान निकलने के द्वारा से। रात्रि पाठशाला द्वारा अक्षर ज्ञान सिखा कर एवं राजनैतिक बिषयों स्वास्थ्य सम्बन्धी बातों को बताकर समाज सेवा किये जाते हैं।

आमदनी:- मसीहियों की संख्या कम है। आर्थिक दशा अच्छी नहीं है। अत: अधिक समय काम धाम की खोज में गाँव और मंडली से बाहर ही रहते हैं। दान देने के बिषय सुविधा देने पर भी पेरिस की आमदनी कम है। जो भी कि धान सिरनी मुरगी दान प्राय: देते हैं किन्तु नियमित रुप से नहीं इस प्रकार प्रतिमाह आमदनी 60 रुपया से 100 के अन्दर रहती है जो प्रतिमाहिना केन्द्रीयकारण किये जाते हैं। भविष्य को नजर रखते हुए मंडली के लिए स्वा पालित मंडली फन्ड के नाम से खजाना जमा किये हैं। परन्तु अब तक पेरिस में सेटरलाइज नहीं होने के कारण से सम्पूर्ण नहीं बताया जा ~~सका~~ रहा है।

आड़चने:- हमारे क्षेत्र में गैरमसीहियों का एक मूल समाज है कि जो ख्रिस्तान होते हैं वे अपने जाति को खो देते हैं अर्थात धर्म परिवर्तन को जाति परिवर्तन समझते हैं। इसलिए जहाँ कहीं धर्मखोजक बपतिस्मा होने के बाद सामाजिक सुविधाओं से वंचित करने की कोशिश करते हैं। कार्य धाम में सहायता नहीं देते हैं फलत: कितने लोग पुराने धर्म में वापस हो जाते हैं। बहुत बार रोमी कथोलिकों की ओर से धर्मखोजकों को भड़काकर बिगाड़ते हैं। इस प्रकार से धर्मखोजक मसीही आर्थिक सहायता की चाह रखते हैं।

समास्याएं:- पेरिस के अन्दर जहाँ जहाँ हमारी मंडलियां स्थापित हो गई हैं। वहाँ पर पड़ती स्थानों में अस्थायी सेवालय बनायी गई थी किन्तु धीरे २ खराब होकर नष्ट हो गये। अत: आँधी तुफान वर्षा काल में उपासनालय की कठिनाईयाँ होती हैं। अत: जमीन खरीदना और गिरजा घर डेरा घर की आवश्यकताएं हैं। दूसरी कि शादी विवाह की समास्याएं मंडली मंडली में है। एक तो लाइसेन्स पादरी की आवश्यकता है। दूसरी जातियता की रुढ़ीवाद जो भी कि इसके विषय भाई बहिनों को समझौता बराबर दिये जाते हैं। फिर अल्प मसीही होने

कारणों सामाजिक रीति रिवाज संस्कृति से घिरे हुए है। अनियामित विवाह एवं विवाह विच्छेद की समास्याएं मंडलियों के लिए जटिल होते हुए आगे बढ़ रहे है। फिर भी ईश्वर की दया से प्रतिवर्ष नये धर्मखोजकों को बपतिस्मा होती जा रहे है। ईश्वर आपही हमारी क्षेत्र की उन्नति में सहायक होवे और आपलोग हमें प्रार्थनाओं में सहायक समरण करें कि ज्योति का प्रकाश आगे बढ़े।

प्रभु में आपका सेवक

पादरी अ. जी. आर्नन्द
कानपूर।

मनोहरपुर पेरिश का संक्षेप रिपोर्ट 1980

१, मान्यवर, डैरेक्टर डा० पौल सिंह, सुपरमैंजर सांगी पादरीगरा और प्रचारकगराों को मनोहरपुर पेरिश की ओर से योशु सहाय।

परमेश्वर को धन्यबाद हो क्योंकि उसकी महान दया से इन साल राँची जो जी० ई० एल चर्च का धार्मिक केन्द्र स्थान है शिक्षा कोरस करने पा रहे हैं। इसी अवसर पर मैं आप लोगों के सन्मुख मनोहरपुर पेरिश का संक्षेप रिर्पोट पेश करता हूँ।

२, मराउलियों का नाम :— १, छकागुंई, २, लाईलोर ३, परोडीह, ४, सागजुड़ी, ५, डुमिरता, ६, होरो ७, महिसगिरा ८, रोगों ९, धुड़िया जमा ९ मराउ-लियां हैं।

३, कर्मचारी :— इस पेरिश में एक पेरिश पादरी और नौ प्रचारक, एक मास्टर हैं।

४, पेरिश की बपतिस्मा संख्या :—

बपतिस्मा संख्या	—	523.
हकीकत	" —	155.
परिवार	" —	107.
गाँव	" —	18.

५, इस पेरिश में निम्न जाति मसीही हुए हैं :— १, हो, २, मुन्डा ३, उराँव, ४, सन्ताल ५, हिन्दू। हिन्दू में - ग्वाला सब हैं।

६, पेरिश का काम :— पेरिश सभा हर महीना होती है। सभा प्रार्थना साथ आरम्भ होती होती है। उसके बाद हाजरी होती है। गत मिनिट पढ़ा जाता है और दढ़ाया जाकर आवश्यक बातें मिनिट से लिया जाता है।

महवारी मराडली रिपोर्ट प्रचारकगरा देते हैं। उनके रिपोर्ट पर बात चीत होती है। मराडली आमधानी सेन्ट्रालाईज होता है। महीना भर का उपदेश तैयारी दिया जाता है। गीत भजन दुरंग और आराधना सब सीखते हैं। कृटिच्यिजिम क्लास भी करते हैं। पादरी अपने टूर प्रोग्राम में मराडली भिजिट भी करते हैं। पेरिश मिटिंग ही में महीना भर का प्रोग्राम बनता है। अन्य बातों के पश्चात प्रार्थना साथ सभा अन्त होती है।

७, धर्मखोजकों की बपतिस्मा संख्या :—

होरो में — 6.
धुड़िया में — 4.
सागजुड़ी में — 2.
रोंगो में — 5
लाईलोर में — 7.

24

~~४~~,

८, रात्री पाठशाला :— होरो, सागजुड़ी और ~~परोडीह हकागुंई~~ लाईलोर में होता था। तेल की कमी और महगांई के कारण बन्द हो गया है।

९, घर सम्बन्धी :— हकागुंई और रोंगो में गिरजा घर बनाने का स्कीम है। हकागुंई के गिरजा घर के लिए लकड़ी सब इन्तिजाम कर रहे थे। इसी बीच में लकड़ी कटाई का आंदोलन शुरू हुआ जिससे हम लोगों को बन्द करना पड़ा।

१०, बिकास सम्बन्धी :— इस पेरिश में अभी ~~तीन~~ ५ मराडली बिकास सम्बन्धी काम ~~कर~~ ध्यान दे रही है। १, परोडीह, २, लाईलोर, महिसगिरा, सागजुड़ी

इस मराउली के लोग बोदी, बैगन, पपीता, मकाई और भिन्डी का खेती पर ध्यान दिए हैं। परोडीह का एक भाई एक हार जोत वाला टांड़ में करीब १५०० बोदी कुदा बोदी रोपा। उससे उसको करीब रुपया हजार से कुछ ऊपर ही आमदानी हुआ।

१२, पेरिश की आमदानी :-

	रु० -	पैसा
जनवरी —	73 —	80.
फरवरी —	86 —	26.
मार्च —	47 —	87.
अप्रैल —	176 —	44.
माई —	144 —	29.
जून —	58 —	03.
जुलाई —	118 —	36
अगस्त —	169 —	99

कुल जमा - 874 - 98

आप का बिश्वस्त
पादरी सी. डी जोजो
मनोहरपुर पेरिश
१५ - १० - ७०.

बोड़सोल पेरिश का रीपोर्ट,
ता० १०- १९८० ई०

महामान्यवर,

डाईरेक्टर, बी० ई० एल० राँची,
प्रमुख्य आध्यक्ष राँची
आंचल आध्यक्ष, कदमा, खुन्टी, राँची,
सभी सुपरवाईजरस गरा तथा सह कर्मियों।

महाशय,

मैं आप सभों को बोड़सोल पेरिश के सभी छोटे बड़े मली ही भाई बहनों की ओर से यीशु सहाय बाता हूँ।
आगे मैं बोड़सोल पेरिश का संक्षेप्त रीपोर्ट इस प्रकार सुनाता हूँ।

१ सीमा क्षेत्र —— बोड़सोल पेरिश जन संख्या और मण्डली की संख्या के ख्याल से बहुत छोटा है, परन्तु पेरिश का सीमा क्षेत्र बहुत लम्बा चौड़ा है। यह पेरिश केन्द्र से पूरब ४० मील और पश्चिम ६५ मील दूर तक फैला हुआ है। यह पेरिश दो राज्यों के बीच में काम करती है। १ला पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिले में, जिसमें पाँच मण्डलियाँ और एक शाखा मण्डली है। २रा उड़ीसा के मयूरभन्ज जिले में, जिस में तीन मण्डलियाँ हैं। यह ईलाका में अधिकतर मण्डलियाँ जंगल और पहड़ों के बीच और किनारे बसे हैं। इस कारण चोर और डाकुओं और तथा जंगली जानवरों से बहुत खतरानाक है। लोधा जैसे चोर डाकू दिन-रात चोरी-डकैत के धन्धा ही में लगे रहते हैं। इन को और अन्य पेशा में मन नहीं लगता है। बस, कंद मूल खाते और चोरी करके जीते हैं। इस प्रकार से लोग इन से डर हमेशा परेशान में रहते हैं।

२, जन संख्या —— १९७९ के जन गनना अनुसार पेरिश की बपतिस्मा अनुसार संख्या ३३६ है, दृढ़िकृत संख्या १५० है। १९८० में नये धर्म खोजकों की संख्या १२, ख्रिस्तान बालकों की बपतिस्मा संख्या २ दृढ़ाकृत संख्या १२, और अन्य मिशन से लौटे उन की संख्या है। इस प्रकार से कुल मिला कर बपतिस्मा संख्या ३५५, दृढ़िकृत संख्या १६२ है। घर संख्या ५० है। इन के अलावे और

तीन जगहों में धर्म खोजक निकले हैं, उन से समय समय पर प्रचारकों द्वारा मुलाकात किया जाता है। आशा है वे निकट भविष्यत में मसीही धर्म ग्रहण करेंगे।

3. सेवकाई का कार्य — मसीही भाई बहनों की सेवकाई के लिए विभिन्न मण्डली में अलग 2 प्रचारक रखे गये हैं। क्रमशः — बोड़सोल में — जीदन बागे, बोड़पाठ — कलीचरण सिंह, पोचांकुली — मार्टिन मराण्डी, चाईतिसोल — ज्योति मराण्डी, पुरुलिया पत्थर चकड़ी — लाल मोहन टुडु, रंगामटिया — जोहन मुरमू, बलिनाड़ — गोस्नर तोपनो, और बतियाबासा में सुन्दर मोहन नाग हैं। प्रचारक सुन्दर मोहन नाग अपना घर से सेवकाई का काम करते हैं। इस से इन को आधा वेतन है। और अन्य प्रचारक अपने मण्डली में रहते हैं। इन सभों का पूरा वेतन है। उपरोक्त प्रचारक अपने अपने मण्डली में रविवार को गिरजा आराधना करते, वचन सुनाते, गीत सीखाते हैं। बच्चों को सन्डे स्कूल करते हैं। इतना ही नहीं, परन्तु सप्ताह में कभी कभी मौका बना कर, आत्मिक जागृति के लिए अन्य समाज एवं भजन का प्रोग्राम भी रखते हैं। प्रचारक लोग मण्डली में मसीहियों के घर भिजिट करते साथ और मसीहियों से भी कुछ बहुत बात-चीत के सिलसिले में धर्मालोचना करते जाते हैं। सन्डे स्कूल में बच्चों को विशेष कर विन्ती, काटेखिजम, गीत और कहानियाँ पुराने और नये नियम से चुन कर सिखाया जाता है। साल में एक बार बाइबल शिक्षा क्लास होती है। जिस में बुढ़े, जवान - युवती, बच्चे भाग लेते हैं। और अन्त तक सम्मेलन में भाग लेते हैं। तीन मण्डली में रात्रि पाठशाला है। जिन में गैर-मसीही बच्चे अधिक हैं। रात्रि पाठशाला में अक्षर ज्ञान पढ़ाया जाता है। एक रोज अर्थात शनिवार रात को बाइबल से कुछ कहानियाँ और गीत भजन कुछ देरी तक हुआ करता है। कितने मण्डली में अनेक असुविधा होने के कारण रात्रिपाठशाला ~~नहीं~~ नहीं खोला जा सका है।

मसीहियों को धन्यवादी जीवन बिताने की ओर भी उन का ध्यान आकर्षित किया जाता है। इस प्रकार से कहीं 2 राज्य वृद्धि गिरजा हुआ करता है।

पुरे पेरिश के देख-भाल के लिए एक पेरिश पाद्री केन्द्र में रहता है। जो प्रत्येक मण्डली का भीजिट, प्रोग्राम के मोताबिक करता है और अन्य कोई जरूरी काम हो जाने से बीच में भी जाता है। अपने भीजिट प्रोग्राम में बचन की सेवकाई, सक्रामेन्त की सेवकाई, और मण्डली के भाईयों की मुलाहिजा घर घर करता है।

भीजिट प्रोग्राम पैरिश बैठकी में बनाया जाता है जो मास में एक बार बैठती है। इस मिटिंग में सभी प्रचारक उपस्थित रहते हैं। मिटिंग में मण्डली का रीपोर्ट लिया जाता है। ~~पेरिश मिटिंग में अलोचना क्लास, उपदेश तैयारी, गीत~~ और विशेष २ बातों पर समाधान के लिए आलोचना होती है और अन्य बातों को उपर भेज दिया जाता है। पेरिश मिटिंग में अलोचना क्लास, उपदेश तैयारी, गीत सिखाया जाता है। कें क्रियाकरण और पेयमेन्त होता है।

सुसमाचार प्रचार का कार्य — धर्म मेला, समाज प्रार्थना तथा भजन, छोटी २ पुस्तकों एवं ट्रेक्ट वितरण, रात्रि पाठशाला के द्वारा किया जाता है।

4) आत्मिक जीवन — भाई बहनों का आत्मिक जीवन प्रायः ठीक ही है। गिरजा आना जाना उन का ठीक है। प्रभुभोज में भागी होना तथा बैबल शिक्षा क्लास आदि ऐसी समाजों में भी जामा होते हैं। इस से पता लगता है कि उन की आत्मिक जीवन प्रायः ठीक है। परन्तु दुःख की विषय यह है कि कितने भाई बहन मतवालेपन में डुब गये हैं, कितने समझाने पर भी नहीं छोड़ सकते हैं। सवाल है — इन को कैसे समझाया जाय?

5) आर्थिक जीवन — आर्थिक जीवन बहुत बुरी है। सब मसीही गरीब परिवार से आते हैं। कितने तो प्रतिदिन दूसरों के पास मजदूरी कमा कर खाते हैं। कितने तो नमाल जाते हैं। फलतः गिरजा आराधना में घटी होती है। ऐसी परिस्थिति में वे मिशन की ओर अपना ध्यान रखते हैं। उन का कहना या मांग हर हमेशा यह रहता है कि अन्य मिशन के जैसा हमारे

मिशन में भी, खाने के लिए खाद्य पदार्थ और कपड़े लते मिलते तो बहुत अच्छा होता और हम सब की भलाई होती। कितने कपड़े लते न होने के कारण गिरजा आना जाना एवं समाज में उठना बैठना भी छोड़ दिये हैं।

६ मिशन जायदाद — बोड़सोल पेरिश के निम्नलिखित मण्डली में मिशन जायदाद है —

① बोड़सोल — गिरजा घर कम्पाउन्ड के लिए १२ कट्ठा जमीन दान पत्र से मिला है। इसी कम्पाउन्ड में, गिरजा घर, प्रचारक डेरा तथा पादरी डेरा बने हैं। कम्पाउन्ड सुरक्षित है। बरसती फल फूल से सुसज्जित है।

② बोड़पाठ — गिरजा घर प्रचारक डेरा घर के लिए बोर्ड की ओर से जमीन खरीदा गया है। इसी में गिरजा घर, प्रचारक डेरा घर बना है। गिरजा आराधना होती है। परन्तु दुःख की बात — कम्पाउन्ड की घेरा नहीं है और न उस में किसी प्रकार की बरसती फल फूल लगे हैं।

③ पुरुलिया पत्थर चकड़ी — गिरजा उपासना भाईयों के डेरे में हुआ करती है। यहाँ गिरजा घर बनाना अति आवश्यक है। क्योंकि गिरजा आराधना में बहुत असुविधा हो रही है। जमीन खरीदना है।

④ पोचा कुली — गिरजा घर और प्रचारक डेरा के लिए जमीन खरीदा गया है। गिरजा घर प्रचारक डेरा घर बन गया है। कम्पाउन्ड प्रायः घेरा लगा है। परन्तु उस में किसी प्रकार की फूल नहीं लगी है न अगल बगल साफ है।

⑤ रंगामटिया — बोर्ड की ओर से जमीन की प्रबंध है। जहाँ गिरजा घर और प्रचारक डेरा बनी है कम्पाउन्ड की घेरा है। पूरे कम्पाउन्ड बरसती फल फूल से सुसज्जित है।

⑥ चाईबीसोल — चाईबीसोल में बोर्ड की ओर से जमीन लिया गया है गिरजा घर बन गया है। परन्तु उस में दरवाजा और खिड़की फीट नहीं हुआ है।

① बलीनाड़ — नया मण्डली है। घर की संख्या २ है। यहीं करीब तीन किलो मीटर दूर पर फिर धर्म खोजक निकल रहे हैं। एक मसीही भाई से गिरजा घर प्रचारक डेरा के लिए जमीन दान मिला है। जहाँ प्रचारक डेरा इन साल तैयार हो गया है। बोर्ड की ओर से आर्जी है कि गिरजा घर के लिए अगला २१ साल में रुपये देने की कृपा करें। ताकि गिरजा घर बन सके। क्योंकि गिरजा करने में बहुत ही असुविधा हो रही है।

② बनियाबाला — यहाँ दो परिवार है। एक प्रचारक है। कोई मिशन जायदाद नहीं है। यहाँ एक उपासना लय की बहुत आवश्यकता है।

२ घर मराम्मति कार्य — उपरोक्त दो मण्डली अर्थात रंगामटिया और कोड़सोल को छोड़ कर बाकि मण्डली का घर पुआल से छारा गया है। जो हर दो या तीन साल में मराम्मत करनी पड़ती है। इस प्रकार से प्रत्येक साल घर मराम्मति का कार्य यहाँ जारी ही रहता है।

३ बाहरिक दबाव — अन्य जाति खिस्तानों को सब से नीच जात समझते हैं। इसलिए इन दोनों के बीच छुआ छुत का भावना बहुत गहरा है। धर्म खोजक लोग निकलने से, उन को नीच धर्म है कह कर बहुत जल्द भड़काया जाता है। खिस्तानों से पूजा चन्दा जबर्दस्त लिया जाता है जो कि उन के शिक्षा के विरुध है। कब्रस्थान के लिए भी हिन्दु समाज से बहुत रोक टोक उठती है। वे एक गाँव से दूसरे गाँव में ले जाकर एक स्थान में गाड़ने नहीं देते हैं। इतना दबाव होते हुए भी, संताल, मुन्डा, कोड़ा जात से खिस्तान हो कर मसीह धर्म में जीवन बिता रहे हैं।

६ पेरिश आमदनी —— पेरिश छोटी है, जन संख्या कम है, परिस्थिति बुरी है, इस प्रकार से यहाँ की आमदनी भी कम है। परन्तु फिर भी यथासंम्भव धन्यवादी जीवन बिताने के लिए कोशिश किया जा रहा है। २० जनवरी से आज तक का आमदनी इस प्रकार है :—

जनवरी — १२०·६३
फरवरी — ११६·३६
मार्च — १७३·४९
अप्रेल — १४८·२६
मई — १३६·३०
जून — १३६·३२
जुलाई — १३०·६०
अगस्त — १६३·०६

कुल योग ११३५·५२ पैसे

इस प्रकार से यहाँ पेरिश की आमदनी कुल ११३५·५२ पैसे है। ये सब केंद्रियाकारण हो गये हैं। इस प्रकार पेरिश का संक्षिप्त रीपोर्ट है। प्रभु आप ही पेरिश की बढ़ती में सहायक होते।

धन्यवाद

प्रभु में आप का विश्वासी
Rev. N. Kandulna.

Chairman,
BORSOLE PARISH.
P.O. Dhansole, Dt. Midnapore.
West Bengal

बघिमा मिशन क्षेत्र — बघिमा रात्रि पाठ-शाला

बच्चों की संख्या, उम्र तथा योग्यता का रिपोर्ट

नाम		उम्र
१ थेरेसा केरकेट्टा	—	१० वर्ष
२, सलोन खल्खो	—	७ ″
३, जिवन्ती केरकेट्टा	—	६ ″
४, रोशन खल्खो	—	५ ″
५, रन्धु किड़ो	—	१२ ″
६, चरवा लोहार	—	११ ″
७, धुमा किड़ो	—	१४ ″
८, पुरन गोप	—	८ ″
९, लक्ष्मी सोरेंग	—	९ ″
१०, बन्ती किड़ो	—	७ ″
११, पैको किड़ो	—	१३ ″
१२, लालो किड़ो	—	१० ″
१३, बुधु लोहार	—	७ ″
१४, सुका डुंगडुंग	—	१५ ″
१५, चौठी किड़ो	—	१२ ″
१६, बिमला किड़ो	—	१३ ″
१७, एतवारी किड़ो	—	११ ″
१८, बन्दी कुमारी	—	१० ″
१९, सुकर कुजूर	—	८ ″
२० बन्धनी ~~किड़ो~~ डुंगडुंग	—	१२ ″
२१ एतवा किड़ो	—	११ ″

शब्द से पढ़ सकने — ५

अक्षर ~~करीब~~ जोड़ने वाले — ७

अक्षर पहिचान — ९

कुल २१

incharge.

Cefe-S-Ekka

Baghima mission field

18/10/80

बघमा मिशन क्षेत्र — देदौली रात्री पाठशाला

रात्री पाठशाला में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का नाम और उम्र नीचे दिया गया है।

	नाम	उम्र
1,	सोमरा कुजूर	12 वर्ष
2,	गुना "	10 "
3,	बिरसा "	12 "
4,	बुधनी "	15 "
5,	जीवन मुकुट खोरे "	6 "
6,	जुसफ डुंगडुंग "	18 "
6,	मतियस "	15 "
8,	मोहित भदर गोप	18 "
9,	बालदेव "	10 "
10,	सावना खड़िया	10 "
11,	मकतु केरकेट्टा	12 "
12,	पायो कुजूर	12 "
13,	सानी "	11 "
14,	सुकरो बिलुंग "	11 "
15,	मंगरी "	12 "
16,	परगुन "	10 "
16,	सानी कुजूर	12 "
18,	बिरसो "	13 "
19,	सोहर "	14 "
20,	कमेश्वर "	12 "
21,	जीत बहादुर गोप	15 "
22,	सैकिल बहादुर "	12 "
23,	राम मोहन "	15 "

11 विद्यार्थी पढ़ तथा लिख सकते हैं। 8 विद्यार्थी अक्षर ज्ञान में आ रहे हैं। बाकी विद्यार्थियों को हिन्दी का वर्णमाला सिखाया जा रहा है।

incharge
Cate S. Ekka
Baghima mission field
18/10/80

बदिगा मिशन क्षेत्र, रात्रि पाठ-शाला टेपसा-टोली

रात्रि पाठशाला में पढ़ने वाले बच्चे बच्चियों का नाम और उम्र निचे लिखा जाता है।

नाम :- उम्र — पढ़ लिख सकते हैं — अक्षर ज्ञान

१, - पुना खड़िया - - - - - - - - - - १२ वर्ष — ~~१०~~ - - ~~[illegible]~~
२, - भुजरा खड़िया - - - - - - - - - - १० - ,, - - ~~[illegible]~~
३, - टेमन खड़िया - - - - - - - - - - १८ - ,, — — ' - - -
४, - बदमव खड़िया - - - - - - - - - २० - ,,
५, - धुरन खड़िया - - - - - - - - - - २२ - ,,
६, - चैनमारी कुमारी - - - - - - - - - ११ - ,,
७, - बुधनी कुमारी - - - - - - - - - १३ - ,,
८, - उरमिला कुमारी - - - - - - - - - १३ - ,,
९, - रमिया बड़ाईक - - - - - - - - - १० ,,
१०, - मधु खड़िया - - - - - - - - - ८ ,,
११, - सोमा खड़िया - - - - - - - - - ७ ,,
१२, - लुंडु खड़िया - - - - - - - - - - ९ - ,,
१३, - कमली कुमारी - - - - - - - - - ९ - ,,
१४, - टुरली कुमारी - - - - - - - - - - १० ,,
१५, - बलामीन कुमारी - - - - - - - - - ७ ,,
१६, - सोमारी कुमारी - - - - - - - - - ६ ,,
१७, - मंगु कुमारी - - - - - - - - - - ६ - ,,
१८, - फिरनी कुमारी - - - - - - - - - १० - ,,
१९, - बिरली कुमारी - - - - - - - - - ८ - ,,
- - - - - - - - - - - - ५ - ,,
२०, - शान्तोष - - - - - - - - - - - ५ - ,,
२१, - बिरसोत बड़ाईक - - - - - - - - ५ - ,,
२२, - सुमरनाथ बड़ाईक - - - - - - - ८ - ,,
२३, - फूलमनी कुमारी - - - - - - - - ५ - ,,
२४, - सुखनी कुमारी - - - - - - - - ५ - ,,
२५, - धुरती कुमारी - - - - - - - - - ८ - ,,
२६, - बिरसु बड़ाईक

पाठ से पढ़ने वाले - ९
अक्षर जोड़ने वाले - ६
अक्षर पहिचान - ११
२६

पु. लक्ष्य खलखो
१८/१०/८०

मध्य अंचल - बधिमा मिशन क्षेत्र का वार्षिक
प्रतिवेदन १९८०
स्थान - रांची।

आदरनीय,
डाईरेक्टर साहब (जी. ई. एल)
जी. ई. एल कलिसा रांची।

महाशय,

आप के समक्ष, बधिमा मिशन क्षेत्र का वार्षिक प्रतिवेदन बड़े हर्ष के साथ दिया जाता है जो इस प्रकार है —

१, परिवार संख्या ४५ है असीहियों की संख्या ११९, दृढीकृत संख्या पुरुष २४ और स्त्री ३२, अदृढीकृत संख्या ६२ है।
जाति संख्या - खड़िया ३९, उरांव ३९, मुण्डा २९, कुरमी ६
ब्रगरा २, बड़ाई २ है।

२, कर्मचारी - ४ हैं। पादरी एस. एस. डुंगडुंग (सुपरभाईजर)
प्रचारक - इलियस केरकेट्टा
" दानियल सोरेंग
" सिमोन एक्का

३, काम का विवरण - लोगों के साथ मिलना जुलना, रोगियों की सेवा करना, खेती बारी की राय सलाह देना, रात्रि पाठशाला, चंगाई काम, लेन-देन के द्वारा प्रचार तथा शिक्षा दी जाती है।

४, प्रचारक दानियल सोरेंग टेडोली में रह कर अपना काम उसी क्षेत्र में कर रहे हैं। प्रचारक इलियस केरकेट्टा स्वयं बधिमा क्षेत्र में काम कर रहे हैं। प्रचारक सिमोन एक्का टेपसा-टोली क्षेत्र में काम कर रहे हैं।

५, इस समय क्षेत्र वालों से करीब-करीब जान-परिचय हो गया है। रोक-टोक की सम्भावना नहीं है। संसार एवं हिन्दु लोग बदनाम की बात करते वे हम ही लोगों से करते हैं। इसलिये हमारी कमजोरी हम सुधार लेते हैं। मसीही धर्म की ओर झुकने वालों को रोकने की कोशिश की जाती है परन्तु अब रोक नहीं सके हैं। आने वाले आ रहे हैं और भी आने वाले हैं। इस साल अब-तक १६ प्राणियों का पवित्र बपतिस्मा हुआ है और २ मसीही लड़कों का बपतिस्मा हुआ है। धर्म खोजक १० हैं।

६, बधिमा स्थान में मिशन जमीन पर एक नव निर्मित गिरजा घर

कार्य हो रहा था। गैर-मसीही बहुत ही खुशी दिखाई देते थे। परन्तु अभी काम न होने के कारण कहते सुनाई देता है कि मिशन गरीब है वे पूछते हैं, "घर बनना क्यों रुका हुआ है कब नहीं बनेगा क्या?" जवाब देना कठिन हो जाता है। ईंट, बालू मौजूद हैं परन्तु सिमेन्ट के कारण घर बनना रुका हुआ है यही जवाब दी जाती है। गिरजा घर बनाने का काम रुक जाना यह इस क्षेत्र के लिये घातक सा हो गया है।

७, बदिमा मिशन क्षेत्र का जमीन — मिशन क्षेत्र बदिमा में १४ ए० धड़ी जमीन बजारिय राजिष्ट्री के प्राप्त है। फिर भी ४ एकड़ लिया जा रहा है जिस का राजिष्ट्री नहीं हुई है पैसे के अभाव से। ढेडोली में २ एकड़ जमीन है। उस के राजिष्ट्री का भी पैसे का अभाव है। इस तरह से क्षेत्र में कुल जमीन २० एकड़ ही है। नवंबर की नापी में जैसे-के-तैसे ही बुकारत कागजद प्राप्त हुआ। बुकारत में पैसा खर्च था किन्तु पालेट मेरा सिलाई है जिस से मैं चुप रह गया और एल०ओ० से मिल गया इस पैसा मांगने वाले चुप हो गये और काम ठीक ही हुआ।

८, जमीन का उपयोग — गधवटी खेती की जाती है। जमीन पर गोन्दली, गोड़ा, मडुवा, उरद और अटंगी खेती की गई थी। परन्तु अधिक वर्षा से खेती उठने नहीं सका और उरद तो गल गया। बदा आमदनी का हिसाब नहीं दे सकते हैं क्योंकि कटनी नहीं हुआ है। कटनी का हिसाब: गोन्दली गोड़ा मडुवा उरद पैसे के रूप में कुल है।

९, क्षेत्र में जानवरों की बिमारी थी। बैल-भैंस और बकरा-बकरा मरे। अभी बिमारी हट रहा है।

१०, खेती-बारी — इस साल वृष्टी ठीक रही। वृष्टी से धान कितने खेतों का डूब गया। खेतों के पौधे ठीक दिखाई देते थे परन्तु अभी फसल में गंधा जोरों से लगा हुआ है। धान बिलकुल सीधा दिखाई देता है। पानी भी बन्द है। खेत सूख रहे हैं। आगे क्या होगा।

११, क्षेत्र में खड़िया, उरांव, रौतिया, राजपुत, लोहरा, चिक और तेली हैं। तेली पढ़े लिखे हैं। वे गरीबों का दबाना चाहते हैं। जमीन बुकारत के समय पैसा दे-दे कर लिखवाने की कोशिश रही परन्तु बिभाग वालों ने पैसा तो लिया और जिस का जमीन है उसी को लिखा है। परन्तु गरीब डरते और खेत में दखल नहीं कर सकते हैं।

१२. १९७९ फरवरी से एक डिसपेन्सरी खोला गया है। डिसपेन्सरी का काम ठीक ही चल रहा था। बिमारी आते, दवाई व्योहार करते और ठीक होते थे। डिसपेन्सरी की जानकारी क्षेत्र में लोगों को हो रही थी। परन्तु हम कर्म-चारी (नर्श) को काफी पैसा दे नहीं सकते हैं। सो नर्श १९८० के मार्च महिने में चार्ज दे कर सरकारी विभाग में चली गयी। उस के चले जाने पर करीब चार महिने डिसपेन्सरी का काम बन्द था। डाक्टर कुलर चन्द्र महतो से अर्जी की गयी और वे आभी डिसपेन्सरी को चालू रखे हुए हैं।

१३. २५ परिवार की छोटी मंडली है। पिछले साल की आमदनी- अक्तूबर १९७९ से सेप्टेम्बर १९८० की कुल आमदनी ११६५=०८ ग्यारह सौ पैंसठ रुपैया आठ पैसा है।

१४. बघिमा मिशन क्षेत्र की निगरानी, मंडल ऑफिसरों से बिलकुल नहीं है। कर्म-चारियों को किसी प्रकार का प्रोत्साहन और उपाय नहीं दिया जाता। कर्म-चारी, हतोत्साह हो कर अपना कर्तव्य अदा कर रहे हैं। ऐसा होते हुए भी क्षेत्र में काम हो रहा है। भविष्य, कर्म-चारियों के नजर में तो दिखाई दे रहा है। इसी से वे आपने में खुशी हैं।

आप का विश्वस्त

Rev. S. S. Dungdung

Supt Baghima M/F

Baghima

14-10-80

बोड़सोल पेरिश में
रात्रि पाठशाला में पढ़नेवाले
बच्चों की संख्या

				संसार	खिस्तान
१	बलीनाड़	२५	=	१८	७
२	बोड़पाठ	१४	=	५	९
३	पोचाकली	१०	=	७	३
४	चाईबोसा	१३	=	४	९
		६२	=	३४	२८

Rev. N. Kandulna
Borsole
18.10.80

Name of Students attending Nightschool

I. Maljamuna

		Age/-
1.	Santial Barla -	8
2.	Samuel Soren -	10
3.	Barnabas Soren -	8
4.	Jadu Murmu -	9
5.	Karu Baskey -	11
6.	Garbhu Baskey -	7
7.	Kajal Soren -	7
8.	Suna Hembram -	11
9.	Guma Baskey -	12

Cate. C. B. Barla
18-10-80

Rev. A. J. Hind
18-10-80

कानपुर पेरिस की रात्रिपाठशाला

		वर्ष	अक्षर ज्ञान
१	तानीता सिंह —	१० -	
२.	जोसेफ सिंह —	१२	
३.	दुलारी सिंह —	११	
४.	जोहन सिंह —	१०	
५.	सुलेमान सिंह —	१०	
६.	चाँदनी सिंह —	१३	
७.	भीम सिंह —	१५	
८.	रहिलमानी सिंह —	८	
९.	सुसारी सिंह —	७	जोड़कर पढ़ सकती है
१०.	मंगोल सिंह —	१२	
११	अदोफ सिंह —	१०	जोड़कर पढ़ सकता है
१२	मलोरी सिंह —	९	अक्षर पहचानती है
१३	एमलेन ग्राईन्द —	५	
१४	प्यारी सिंह —	१७	

Rev. A. Jhing
18. 10-80

नकटी पेरिस रात्री पाठशाला में
बैठने वाले छात्रों की ~~की~~ संख्या

१.	नकटी	मण्डली -	३८
२.	सीसीबहा	" -	११
३.	बोंगाजंगा	" -	8
४.	उदलकोम	" -	२१
५.	काड़ेदा	" -	२५
६.	रोलाडीह	" -	१३
७.	जोंको	" -	
८.	पाताहातु	" -	१२
९.	बाबिबेड़ा	" -	१७.

टोटल विद्यार्थी सं० १४१

Rev. H Hansda
Chairman
Nakti Parish
18-10-80

जगन्नाथपुर पेरिस रात्रिपाठशाला विद्यार्थियों की संख्या १९८०

	मंडली का नाम	बच्चे		वयस्क		जोड़
		बालक	बालिका	जवान	युवती	
1	जगन्नाथपुर	४	5	-	-	9
२	रामसाई	5	२	२	४	13
3	हेरसाथ	6	-	-	-	6
४	बरकुरा	४	-	-	-	४
	जोड़	19	7	२	४	32

Rev K. L. Kerketti
Jaganathpur Parish
19-10-80

Number of Night school
Students from
Jorapur Parish

1 Badam Pahar ~~16~~ 13

2 Cheligudum 14

3 Kalaetumba 13

4 Barkata - .6

5 Junos Kondulu
Saruda - - .13

6 Bordeuma - 16.

7 Samaydih - 18 (Chakuora Parish)

total. 93

मनोहरपुर पेरिश रात्रिपाठशाला विद्यार्थी की संख्या- १९८०.

	मंडली का नाम	बच्चे		वयस्क		योग
		बालक	बालिका	जवान	युवती	
१,	सांगजुड़ी	१०	९			१९
२,	लाईलोर	१२	७			१९
३,	परोडीह	९	४			१३
४.	होरो	५				५
५	हाकागुई	३	४		४	११
	योग	३९	२४		४	६७

Parish Chairman
Rev. C.D. Jojo
18-10-80